नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 385, नई दिल्ली, बुधवार 25 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"जो व्यक्ति कठिनाइयों में भी मुस्कुराना सीख लेता है,वही जीवन की असली ऊँचाइयों को छूता है।"

02 गर्मियों की छुटियों में अपने साथ जरूर रखें ये प्रोडक्ट्स

06 पक्षी देखने से मस्तिष्क का पुनः आकार बदल सकता है

08 जादुई आंकड़ों का बजट, हकीकत में देश, किसान और पंजाब के साथ अन्याय" ..

3rd PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026

Sunday, 29th March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

गर्मियों की छुटियों में अपने साथ जरूर रखें ये प्रोडक्ट्स

शहनाज़ हुसैन

गर्मियाँ शुरू हो गई हैं / इस सीजन में ज्यादातर लोग अपने परिवार / दोस्तों के संग पहाड़ों / पर्यटक स्थलों पर घूमने का प्लान बनाते हैं ताकि ठण्डी हवाओं का आनन्द ले सकें और शहरों की भाग दौड़/ उबाऊ भरी जिन्दगी से राहत मिल सके /

लेकिन गर्मियों के मौसम में खुले आसमान में घूमने से पसीने , टैनिंग , त्वचा में जलन , सनबर्न से सौन्दर्य चौपट हो जाता है जिससे आपका मूड खराब हो जाता है /

लेकिन अगर आप अपने साथ कुछ जरूरी सौन्दर्य प्रसाधन साथ रखेंगे तो आपको अपनी त्वचा बालों के प्रति ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं होगी /

अगर आप अपने साथ कुछ जरूरी ब्यूटी प्रोडक्ट्स रखते हैं तो आप इस मौसम में त्वचा को होने वाले नुकसानों से खुद को बचा सकते हैं। इसलिए मेरा यह सुझाव है की अपने सामान में एक छोटा सा ब्यूटी बैग भी ले चलें और निश्चिन्त होकर पहाड़ों का आनन्द लें /

1 ---फेस वाइप्स--------

गर्मियों में सबसे ज्यादा परेशानी पसीने से होती है /

गर्मियों के में मौसम तेज धुप की बजह से ऑयली त्वचा ज्यादा ऑयली हो जाती है जिससे चेहरे पर गन्दगी ,तेल जम जाता है / इससे चेहरा डल हो जाता है और मेक अप भी खराब हो जाता है /

इस लिए जब भी गर्मियों की छुटियों में आप घूमने जाएँ तो अपने साथ फेस वाइप्स जरूर रखें

चेहरे को साफ करने के लिए फेशियल वाइप्स का प्रयोग बड़ा आसान, सुविधाजनक और अच्छा माना जाता है। फेशियल वाइप्स के द्वारा हाथों.हाथ बिना पानी के चेहरे की त्वचा साफ भी हो जाती है और चेहरे की नर्व्स

में ब्लड सर्कुलेशन भी बढ़ता है/

गीले फेस वाइप्स को आप अपनी सुविधा के अनुसार उपयोग कर सकती हैं / इस गीले फेस वाइप्स का उपयोग आप यात्रा के दौरान जब आपके पास पानी और फेस वॉश उपलब्ध नहीं हो , तो कर सकती हैं / एक वाइप निकाल कर चेहरे को पोंछने से आपकी त्वचा तुरंत साफ और ताज़ा महसूस महसूस करती है /

2 ----वाटर प्रूफ काजल ---- ---

महिलाएं अपनी सुन्दरता को निखारने में आँखों पर काफी ध्यान देती हैं / काजल के बिना आँखे अधूरी सी रहती हैं /

गर्मियों के मौसम में गर्मी और पसीने से काजल फैलने के समस्या आम है /

इस समस्या से बचने के लिए वाटरप्रूफ काजल आपकी मदद कर सकता है / वाटर प्रूफ काजल आँखों पर लम्बे समय तक रहता है / यह आँखों को परेशान नहीं करता और सेंसिटिव आँखों बाली महिलाओं के लिए भी उपयुक्त होता है /

जेल आधारित काजल 12 घण्टों तक टिका रहता है जिसे आप ब्रश की मदद से लगा सकती हैं /

जहां तक सम्भव हो तो काजल की पतली लाइन लगाएं /पतली लाइनें कम फैलती है जिससे आपका चेहरा पूरा दिन साफ़ और सुन्दर दीखता है / पतली लाइनें ज्यादा प्रकृतिक दिखती हैं और यात्रा के दौरान मेक अप के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त होती हैं क्योंकि पतली लाइन को ठीक करना भी आसान होता है /

3 ---- ग्लिटर------जब भी आप छुट्टियाँ मनाने के लिए जाते हैं तो अमुमन रात को बाहर पार्टियों में जरूर जाना पड़ता है / रात के समय आँखों और नाखूनों के लुक को बेहतर करने के लिए ग्लिटर का प्रयोग करना चाहिए जिससे आप औरों से बेहतर दिखें /ग्लिटर नाखूनों को एक नया लुक देता है जिससे साधारण मैनीक्योर भी खास दिखने लगता है /

ग्लिटर मैनीक्योर अनगिनत प्रकार के कस्टमाइज़ेशन का अवसर प्रदान करता है और विभिन्न साइज़, रंगों और फिनिश के साथ आपके सौन्दर्य को चार चाँद लगा देता है /

ग्लिटर कई तरह के नाखूनों और उनकी लंबाई पर बहुत खूबसूरत लगता है। चाहे आपके नाखून छोटे हों या लंबे एक्सटेंशन, ग्लिटर उनकी खूबसूरती को बढ़ा सकता है और उन्हें आकर्षक और सुंदर बना सकता है/

4 --ड्राई शैम्पू ----

जब भी आप ट्रैवल कर रहे होते हो तो समय की हमेशा कमी रहती है और बालों को धोने का कम ही समय मिल पाता है / ऐसे में ड्राई शैम्पू काफी मददगार साबित हो सकता है /

ड्राई शैम्पू पानी रहित उत्पाद है जिसे बालों को साफ करने के लिए आम तौर पर स्प्रे या पाउडर के रूप में उपयोग किया जाता है / इसे सिर की त्वचा पर लगाया जाता है और यह बालों से तेल या सीबम को सोख लेता है जिससे बाल साफ और तरोताजा दिखते हैं / यदि आपकी स्कैल्प संवेदनशील है तो आपको अल्कोहल आधारित या सुगन्धित ड्राई शैम्पू से बचना चाहिए / कुछ ड्राई शैम्पू अलग अलग शेड्स में भी आते हैं जोकि आपके बालों की शेड से मैच करते हैं /

लेखिका अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य है और हर्बल क्वीन के रूप में लोकप्रिय है/

स्वस्थ बालों के लिए आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों (Micronutrients) का पर्याप्त सेवन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ये पोषक तत्व बालों के रोमकूपों (Hair Follicles) के स्वास्थ्य को बनाए रखने, मेलेनिन (Melanin) के उचित उत्पादन तथा बालों की मजबूत और स्वस्थ वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कुछ विशेष विटामिन और खनिजों—विशेष रूप से विटामिन-B12, बायोटिन, आयरन, कॉपर और जिंक—की कमी को समय से पहले बालों के सफेद होने (Premature Greying), बालों के पतले होने और बालों की गुणवत्ता में गिरावट से जोड़ा गया है।

नीचे वयस्कों के लिए इन पोषक तत्वों की अनुमानित दैनिक आवश्यकता (Recommended Daily Allowance – RDA) तथा बालों के स्वास्थ्य में उनकी भूमिका दी गई है।

1. विटामिन-B12 (कोबालामिन)

अनुशंसित दैनिक आवश्यकता (RDA):

वयस्कों के लिए लगभग 2.4 माइक्रोग्राम (µg) प्रतिदिन

बालों के लिए महत्वः

लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायता करता है

बालों के रोमकूपों तक ऑक्सीजन की आपूर्ति को बेहतर बनाता है

मेलेनिन के उत्पादन को बनाए रखने में सहायक

इसकी कमी से होने वाले बालों के पतले होने को रोकने में मदद करता है

प्राकृतिक स्रोतः

दूध, दही, पनीर, अंडे, मछली, चिकन तथा फोर्टिफाइड अनाज।

शाकाहारी लोगों और बुजुर्गों में विटामिन-B12 की कमी होने की संभावना अधिक होती है, इसलिए उन्हें अपने आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

2. बायोटिन (विटामिन-B7)

अनुशंसित दैनिक आवश्यकता (Adequate Intake):

वयस्कों के लिए लगभग 30 माइक्रोग्राम (µg) प्रतिदिन

बालों के लिए महत्वः

केराटिन (बालों का मुख्य संरचनात्मक प्रोटीन) के निर्माण में सहायक

बालों को मजबूत बनाता है

बालों के टूटने को कम करने में मदद करता है

खोपड़ी (स्कैल्प) और बालों के स्वस्थ विकास को प्रोत्साहित करता है

प्राकृतिक स्रोतः

अंडे की जर्दी, बादाम, अखरोट, मूंगफली, सोयाबीन, केला, ओट्स और साबुत अनाज।

3. आयरन (लौह तत्व)

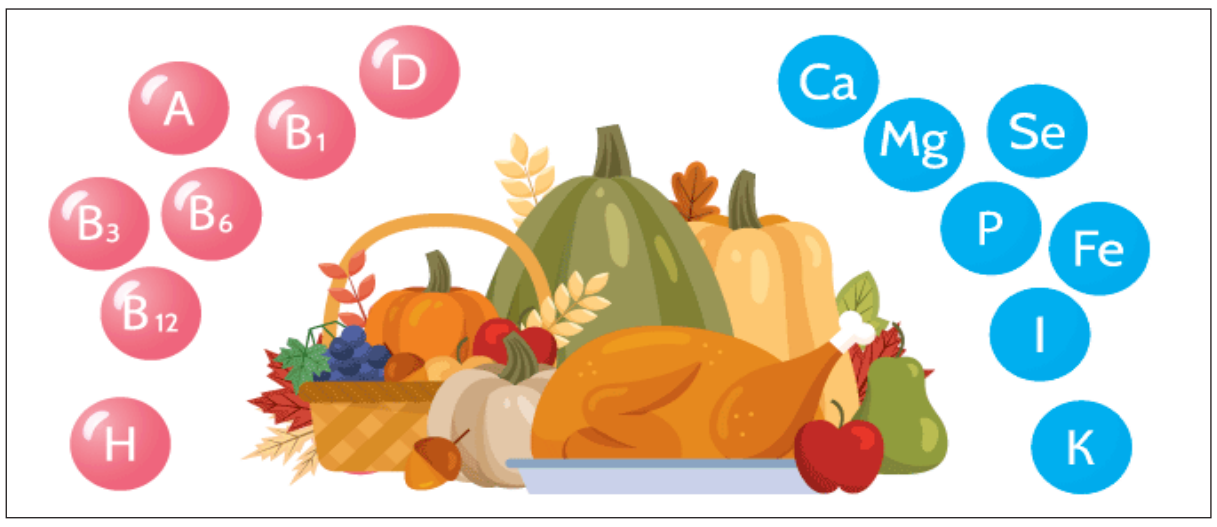

अनुशंसित दैनिक आवश्यकता (RDA):

वयस्क पुरुषः 8 मिलीग्राम प्रतिदिन

वयस्क महिलाएँः 18 मिलीग्राम प्रतिदिन

बालों के लिए महत्वः

रक्त में ऑक्सीजन के परिवहन में सहायता करता है

बालों के रोमकूपों को पोषण प्रदान करता है

आयरन की कमी से होने वाले बाल झड़ने को रोकने में सहायक

प्राकृतिक स्रोतः

पालक, मसूर, चना, बीन्स, खजूर, कद्दू के बीज और लाल मांस।

4. कॉपर (तांबा)

अनुशंसित दैनिक आवश्यकता (RDA):

वयस्कों के लिए लगभग 900 माइक्रोग्राम (µg) प्रतिदिन

बालों के लिए महत्वः

मेलेनिन के निर्माण के लिए आवश्यक

बालों के रंग निर्माण में शामिल एंजाइमों को सक्रिय करता है

बालों के प्राकृतिक रंग को बनाए रखने में सहायक

प्राकृतिक स्रोतः

तिल, काजू, बादाम, मशरूम, साबुत अनाज और डार्क चॉकलेट।

5. जिंक (Zinc)

अनुशंसित दैनिक आवश्यकता (RDA):

वयस्क पुरुषः 11 मिलीग्राम प्रतिदिन

वयस्क महिलाएँः 8 मिलीग्राम प्रतिदिन

बालों के लिए महत्वः

बालों के रोमकूपों की मरम्मत और पुनर्निर्माण में सहायक

खोपड़ी के स्वास्थ्य को बनाए रखता है

बालों के पतले होने और अत्यधिक झड़ने को कम करने में मदद करता है

प्राकृतिक स्रोतः

कद्दू के बीज, मेवे (नट्स), दालें, दुग्ध उत्पाद और साबुत अनाज।

✓ निष्कर्ष

विटामिन-B12, बायोटिन, आयरन, कॉपर और जिंक जैसे आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्याप्त सेवन बालों के रोमकूपों के स्वास्थ्य, मेलेनिन के उत्पादन और बालों की मजबूत वृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

फल, सब्जियाँ, प्रोटीन, मेवे और साबुत अनाज से भरपूर संतुलित आहार सामान्यतः इन पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा प्रदान कर सकता है।

यदि किसी व्यक्ति को समय से पहले बालों का सफेद होना या अत्यधिक बाल झड़ना जैसी समस्याएँ दिखाई दें, तो उचित चिकित्सा सलाह लेना तथा प्रयोगशाला परीक्षणों के माध्यम से संभावित पोषण संबंधी कमियों का मूल्यांकन कराना लाभकारी हो सकता है।

'विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस' हमें यह सिखाता है कि हर जीवन अनमोल है : डॉ रुप कुमार बनर्जी

हर वर्ष 21 मार्च हमें एक गहन सच्चाई से परिचित कराता है। यह केवल एक तिथि नहीं, बल्कि संवेदनशीलता, समझ और समावेश का प्रतीक है। ₹विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस₹ हमें यह सिखाता है कि हर जीवन अनमोल है—चाहे वह सामान्य हो या विशेष। डाउन सिंड्रोम एक आनुवंशिक अवस्था है, जिसमें बच्चे के शरीर में 21वें क्रोमोसोम की एक अतिरिक्त प्रति होती है। इसी कारण इसे "ट्राइसॉमी 21" भी कहा जाता है। यह कोई रोग नहीं, बल्कि एक विशेष जैविक भिन्नता है, जो शारीरिक और मानसिक विकास को कुछ हद तक धीमा कर सकती है। ऐसे बच्चों में कुछ शारीरिक विशेषताएँ दिखाई दे सकती हैं, जैसे गोल चेहरा, छोटी आँखें और धीमी वृद्धि। लेकिन इन सबसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है उनका निर्मल हृदय, स्नेह और सहजता। ये बच्चे अक्सर अत्यंत प्रेमपूर्ण, धैर्यवान और भावनात्मक रूप से समृद्ध होते हैं। समाज को यह समझना चाहिए कि यह "असामान्यता" नहीं, बल्कि एक "विशिष्ट पहचान" है।

डाउन सिंड्रोम से ग्रसित बच्चों को कुछ स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जैसे हृदय से जुड़ी समस्याएँ, थायरॉयड असंतुलन या कमज़ोर रोग-प्रतिरोधक क्षमता। इसलिए नियमित स्वास्थ्य जांच, संतुलित एवं पौष्टिक आहार, हल्का योग एवं शारीरिक गतिविधि, तथा विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से उनके मानसिक विकास को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।

होम्योपैथिक दृष्टिकोण :- होम्योपैथी में प्रत्येक व्यक्ति का उपचार उसकी संपूर्ण प्रकृति, शारीरिक और मानसिक को ध्यान में रखकर किया जाता है। यही सिद्धांत डाउन सिंड्रोम पर भी लागू होता है। यह चिकित्सा पद्धति शरीर की आंतरिक जीवन शक्ति को सशक्त बनाने, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और समग्र विकास को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित होती है। साथ ही, यह व्यवहार और भावनात्मक संतुलन में सुधार लाने में भी सहायक हो सकती है।

समाज की भूमिका :- स्वीकार्यता ही सबसे बड़ा उपचार है। डाउन सिंड्रोम से जुड़ी सबसे बड़ी चुनौती शारीरिक नहीं, बल्कि सामाजिक है। हमें इन बच्चों के प्रति सहानुभूति नहीं, बल्कि सम्मान का भाव रखना चाहिए। हमें उनके साथ चलना है, उन्हें अलग नहीं करना है, और उन्हें शिक्षा एवं रोजगार के समान अवसर प्रदान करने हैं।

ये बच्चे हमें सरलता से जीने की सच्ची कला सिखाते हैं। उनकी मुस्कान में कोई छल नहीं होता, सिर्फ सच्चाई और प्रेम होता है। इस विश्व डाउन सिंड्रोम दिवस पर हम यह संकल्प लें कि हर "विशेष" व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर देंगे, हर बच्चे को आगे बढ़ने का मौका देंगे, और एक ऐसा समाज बनाएंगे जहाँ भिन्नताएँ ही सुंदरता बनें।

"सामान्य होना आवश्यक नहीं, इंसान होना आवश्यक है।"

यही इस दिवस का सच्चा संदेश है स्वीकार्यता, संवेदना और एक स्वस्थ, समावेशी समाज की ओर एक सशक्त कदम।

घरेलू उपाय (Home Remedies):

यद्यपि घरेलू उपायों से सफेद हुए बालों को पूरी तरह से पुनः काला करना संभव नहीं होता, फिर भी ये उपाय बालों के समग्र स्वास्थ्य (Overall Hair Health) को बेहतर बनाने में सहायक हो सकते हैं।

1. आंवला (Amla / Indian Gooseberry):

आंवला विटामिन C और शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर होता है। इसे फल के रूप में, रस (जूस) के रूप में या चूर्ण के रूप में सेवन किया जा सकता है। नियमित सेवन से बालों के प्राकृतिक रंग को बनाए रखने में सहायता मिल सकती है।

2. करी पत्ता (Curry Leaves):

करी पत्तों को नारियल तेल में उबालकर छान लें और इस तेल को सिर की त्वचा (स्कैल्प) पर लगाएँ। यह बालों को पोषण देने और समय से पहले सफेद होने की प्रक्रिया को धीमा करने में सहायक माना जाता है।

3. काले तिल (Black Sesame Seeds):

काले तिल पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। इनका नियमित सेवन बालों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने तथा प्राकृतिक रंग को बनाए रखने में सहायक हो सकता है।

4. मेहंदी (Henna):

बालों में मेहंदी लगाने से प्राकृतिक रंग मिलता है और साथ ही यह बालों को पोषण देकर उन्हें मुलायम और मजबूत बनाने में भी सहायक होती है।

5. संतुलित और पौष्टिक आहार (Healthy Diet):

बालों के स्वास्थ्य के लिए ऐसा संतुलित आहार आवश्यक है जिसमें पर्याप्त मात्रा में विटामिन, खनिज और प्रोटीन हों। इसके लिए हरी पत्तेदार सब्जियाँ, मेवे (नट्स), बीज (सीड्स) और प्रोटीन युक्त आहार का नियमित सेवन करना लाभकारी होता है।

6. तनाव प्रबंधन (Stress Management):

अत्यधिक मानसिक तनाव भी समय से पहले बालों के सफेद होने का कारण बन सकता है। इसलिए योग, ध्यान (Meditation) और नियमित व्यायाम जैसी गतिविधियाँ अपनाने से तनाव कम करने में मदद मिलती है, जो बालों के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है।

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 385, नई दिल्ली, बुधवार 25 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"जो व्यक्ति कठिनाइयों में भी मुस्कुराना सीख लेता है,वही जीवन की असली ऊँचाइयों को छूता है।"

02 गर्मियों की छुटियों में अपने साथ जरूर रखें ये प्रोडक्ट्स

06 पक्षी देखने से मस्तिष्क का पुनः आकार बदल सकता है

08 जादुई आंकड़ों का बजट, हकीकत में देश, किसान और पंजाब के साथ अन्याय" ..

रेखा सरकार का दूसरा बजट मूलभूत सुविधाओं में सुधार पर केंद्रित, वायु प्रदूषण से निपटने पर

रेखा गुप्ता सरकार का दूसरा बजट वायु प्रदूषण से निपटने और मूलभूत सुविधाओं में सुधार पर केंद्रित है। कुल बजट का 21% पर्यावरण संरक्षण के लिए आवंटित किया गया है, जिसमें सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना शामिल है। बजट में महिलाओं के लिए 2500 मासिक सहायता की उम्मीद जगाई गई है।

नई दिल्ली। राजधानी की सबसे गंभीर समस्या वायु प्रदूषण के दृष्टिकोण से देखा जाए तो रेखा गुप्ता सरकार का यह दूसरा बजट उम्मीद जगाता है। ग्रीन बजट बताते हुए कुल बजट का 21 प्रतिशत पर्यावरण संरक्षण की विभिन्न योजनाओं के लिए आवंटित करना दर्शाता है कि पहले साल में प्रयास भले उस स्तर पर न रहे हों, लेकिन सरकार की नजर में वायु प्रदूषण एक बड़ी चिंता अवश्य है।

सरकार ने जहां प्रदूषण घटाने के लिए प्रत्यक्ष उपायों के तहत सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने व वन एवं पर्यावरण विभाग का बजट बढ़ाने का काम किया है, वहीं परोक्ष उपायों में नालों पर सौर ऊर्जा पैनल लगाने की योजना के साथ ही दिल्ली में सेमीकंडक्टर और ड्रोन पॉलिसी लाने जैसी योजनाएं महत्वपूर्ण हैं।

ट्रैफिक जाम को लेकर नहीं हुए कुछ प्रयास

दिल्ली में यातायात जाम एक बड़ी समस्या है और इसे लेकर कोई गंभीर प्रयास विगत कुछ वर्षों में नजर नहीं आया है। न ही लोक निर्माण विभाग इसके लिए कुछ करता नजर आया है और न ही यातायात पुलिस। यातायात जाम की समस्या वायु प्रदूषण से भी सीधे जुड़ी हुई है।

मौजूदा बजट में दिल्ली को जाममुक्त करने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन कराने का प्रस्ताव किया गया है। यह दर्शाता है कि यदि इसे गंभीरता से लिया गया तो इस अध्ययन पर काम करके राजधानी को सुनियोजित तरीके से जाममुक्त करने के गंभीर प्रयास किए जा सकते हैं।

प्रति महीने 2500 रुपये की जगी उम्मीदें

मुख्यमंत्री को दिल्ली की महिलाएं रेखा दीदी कहती हैं। रेखा दीदी ने बजट में महिलाओं का खास ख्याल भी रखा है। 2500 रुपये प्रतिमाह देने की चुनावी घोषणा इस बार पूरी होने की उम्मीद जगी है। महिलाएं आत्मनिर्भर बनें और सुरक्षित रहें, इसकी चिंता बजट में साफ नजर आती है। दिल्ली को और संपन्न बनाने के लिए महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना भी जरूरी है।

नई सड़कें व फ्लाईओवर निर्माण, सभी को नल से स्वच्छ पेयजल, अनियोजित कालोनियों को सीवर लाइनों से जोड़ने, सीवरेज शोधन क्षमता बढ़ाने, ड्रेनेज व्यवस्था में सुधार, झुग्गी झोपड़ीवासियों को मकान उपलब्ध कराने और शिक्षा व स्वास्थ्य ढांचा मजबूत करने से जुड़ी योजनाओं में प्रमुखता से बजटीय आवंटन किया जाना सरकार की मूलभूत सुविधाओं में सुधार की मंशा दर्शाता है।

दिल्ली को वैश्विक सुविधाओं वाला महानगर बनाने की बातें करने से पहले राजधानी की मूलभूत समस्याओं को दूर किया जाना जरूरी है। सरकार के बजट से यह दृष्टिकोण परिलक्षित होता है, जिसे दिल्ली और दिल्लीवासियों के लिए एक सकारात्मक संकेत कहा जा सकता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

साइबर अपराधी हमेशा मौजूदा परिस्थितियों का फायदा उठाने के अवसर तलाशते रहते हैं

मार्च 2026 में मध्य पूर्व युद्ध के कारण एलपीजी गैस की आपूर्ति प्रभावित हुई, जिसके चलते भारत में एलपीजी बुकिंग घोटाले तेजी से बढ़े। महाराष्ट्र, पंजाब, ओडिशा और दिल्ली जैसे राज्यों से सैकड़ों मामले दर्ज हुए। धोखेबाज़ नकली SMS/WhatsApp संदेश, फ़िशिंग लिंक और खतरनाक ऐप्स का इस्तेमाल कर नकली सिलेंडर डिलीवरी के नाम पर वित्तीय साइबर धोखाधड़ी कर रहे हैं। सबसे सुरक्षित उपाय है कि केवल आधिकारिक एलपीजी पोर्टल या ऐप्स से ही बुकिंग करें और संदिग्ध लिंक पर कभी क्लिक न करें।

रिपोर्टेड मामलों का पैमाना

- **महाराष्ट्र:** कई पीड़ितों ने ₹1–3 लाख तक गंवाए जब धोखेबाज़ गैस कंपनी प्रतिनिधि बनकर सामने आए।
- पंजाब और ओडिशा: एलपीजी की कमी का फायदा उठाकर संदिग्ध कॉल और लिंक में वृद्धि।
- दिल्ली NCR: पुलिस ने चेतावनी जारी की जब नकली SMS अभियान Indane या LPG FAST नाम से चलाए गए।

मार्च 2026 में ही दर्जनों FIR और सैकड़ों शिकायतें दर्ज हुईं, जो व्यापक धोखाधड़ी को दर्शाती हैं।

एलपीजी बुकिंग घोटालों का तरीका (Modus Operandi)

- नकली SMS/WhatsApp अलर्ट: संदेशों में कनेक्शन डिस्कनेक्ट होने की धमकी या तुरंत डिलीवरी का लालच दिया जाता है।
- फ़िशिंग लिंक: धोखेबाज़ नकली वेबसाइट बनाते हैं जो आधिकारिक पोर्टल जैसी दिखती हैं।
- खतरनाक APK फ़ाइलें: नकली LPG ऐप डाउनलोड करवाई जाती हैं, जो बैंकिंग जानकारी चुरा लेती हैं।
- सोशल मीडिया का दुरुपयोग: फेसबुक और X (Twitter) पर झूठे लिंक फैलाए जाते हैं।

एलपीजी बुकिंग घोटालों से बचाव के उपाय

- केवल आधिकारिक चैनलों से बुकिंग करें (Indane, HP Gas, Bharat Gas)।
- संदिग्ध SMS/WhatsApp लिंक पर क्लिक न करें।
- प्रेषक की पहचान जांचें—गंभीर कंपनियां यादृच्छिक IDs से लिंक नहीं भेजतीं।
- APK फ़ाइलें डाउनलोड न करें, केवल Google Play Store या Apple App Store से ऐप इंस्टॉल करें।
- तुरंत शिकायत दर्ज करें—स्थानीय पुलिस साइबर सेल या राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर।
- परिवार को जागरूक करें—विशेषकर बुजुर्ग और कम तकनीकी जानकारी वाले लोग।

मुख्य जोखिम संकेतक

- धमकी भरी भाषा ("आपका LPG डिस्कनेक्ट हो जाएगा")।
- तुरंत डिलीवरी या छूट का लालच।
- व्यक्तिगत बैंकिंग जानकारी या OTP की मांग।
- संदिग्ध डोमेन वाले लिंक (*.xyz, *.top)।

निष्कर्ष:

एलपीजी बुकिंग घोटाले लोगों की घबराहट और जल्दबाज़ी का फायदा उठा रहे हैं। केवल आधिकारिक पोर्टल का उपयोग करके, अनचाहे संदेशों को नज़रअंदाज़ करके और धोखाधड़ी की रिपोर्ट करके उपभोक्ता खुद को सुरक्षित रख सकते हैं।

कानून बनाम हकीकत: आखिर क्यों नहीं रुक रहीं सीवर मौतें ?

-सुनील कुमार महला

हमारे देश में सीवर और सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान होने वाली मौतें एक अत्यंत गंभीर, संवेदनशील और शर्मनाक सच्चाई हैं। वास्तव में, यह समस्या केवल और केवल तकनीकी नहीं, बल्कि यह सामाजिक, प्रशासनिक और मानवाधिकारों से गहराई से जुड़ी हुई है।इस क्रम में, सबसे दुखद व अहम तथ्य यह है कि 'हाथ से मैला ढोने वालों के नियोजन का प्रतिषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम, 2013' हमारे देश में लागू होने के बावजूद भी यह प्रथा वर्तमान में पूरी तरह से समाप्त नहीं हो सकी है।

बहरहाल,यदि हम यहां पर आंकड़ों की बात करें तो उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2018 से 2023 के बीच देश में 400 से अधिक मजदूरों की मौत सीवर या सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान हुई। वहीं पिछले पाँच वर्षों (वर्ष 2018 से वर्ष 2023 तक) में लगभग 339 मौतें दर्ज की गईं। वर्षवार सरकारी आंकड़ों के अनुसार साल 2018 में 67, 2019 में 117, 2020 में 22, 2021 में 58, 2022 में 66 तथा 2023 में (आंशिक डेटा) 9 मौतें हुईं। वहीं, राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग के अनुसार वर्ष 1993 से 2025 तक कुल लगभग 1313 मौतें दर्ज की गई हैं। इसके अतिरिक्त, साल 2019 से 2023 के बीच लगभग 377 मौतें, 2016–2020 के बीच लगभग 340 मौतें तथा 1993–2010 के बीच करीब 920 मौतें हुईं। वर्ष 2017 के बाद कुछ समय तक औसतन हर 5 दिन में एक मौत सीवरेज सफाई के दौरान दर्ज की गई।

यदि हम यहां पर राज्यवार स्थिति को देखें तो उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, हरियाणा, दिल्ली और महाराष्ट्र में अपेक्षाकृत अधिक मौतें सामने आई हैं। संसद में प्रश्नकाल के दौरान प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार 2021 से 2025 के बीच कुल 315 सफाईकर्मियों की मौत हुई, जिनमें महाराष्ट्र में 53, हरियाणा में 43, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में 35-35, दिल्ली में 26 तथा गुजरात में 24 मौतें दर्ज की गईं।

हालिया आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2017 से 2026 के बीच लगभग 622 से अधिक सफाईकर्मियों की मौत हो चुकी है, जिनमें से 471 मौतें केवल 2019 के बाद दर्ज की गईं। महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश जैसे

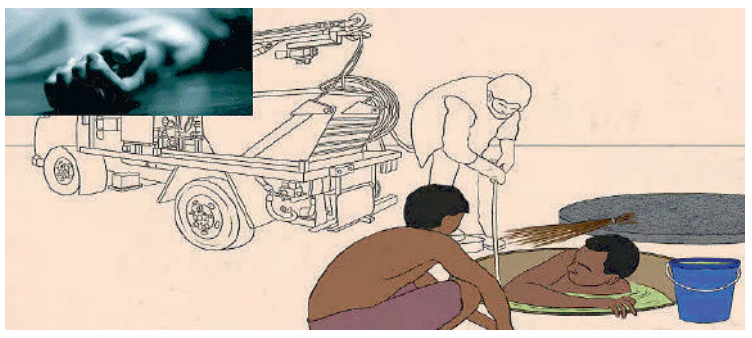

राज्यों में इन घटनाओं की संख्या सबसे अधिक है।

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि ये केवल आधिकारिक आंकड़े हैं; वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक हो सकती है, क्योंकि अनेक घटनाएं तो दर्ज ही नहीं हो पातीं हैं।

जैसा कि ऊपर भी इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं कि भारत में मैनुअल स्कैवेंजिंग-2013 के कानून के तहत पूर्णतः प्रतिबंधित है, फिर भी ठेकेदारी प्रथा, विभिन्न सुरक्षा उपकरणों की कमी और प्रशासनिक लापरवाही के कारण ये मौतें आज भी जारी हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि अधिकांश घटनाएं शहरी क्षेत्रों में और विशेष रूप से ठेकेदारी व्यवस्था के अंतर्गत होती हैं। कितनी बड़ी बात है कि आज हम आधुनिक तकनीक व एआइ के जमाने में जी रहे हैं, लेकिन बावजूद इसके आज भी कई स्थानों पर सीवर की सफाई मैन्युअल रूप से कराई जाती है। यह एक कटु सत्य है कि आज भी मास्क, ऑक्सीजन सिलेंडर, गैस डिटेक्टर जैसे आवश्यक सुरक्षा उपकरणों का गंभीर अभाव बना हुआ है।

वास्तव में, सीवरेज साफ-सफाई की यह समस्या गहरे सामाजिक आयाम भी रखती है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार लगभग 92% सफाईकर्मी अनुसूचित जाति और अत्यंत पिछड़े वर्गों से आते हैं, जिन्हें निजी ठेकेदार कम मजदूरी पर अत्यंत खतरनाक परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर करते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सीवर में होने वाली मौतें मात्र दुर्घटनाएँ नहीं, बल्कि व्यवस्था की विफलता हैं।

पाठक यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि सीवर के भीतर मौजूद जहरीली गैसें अत्यंत घातक होती हैं और जैसे ही कोई सफाईकर्मी उसमें उतरता है, गैस तेजी से उसके शरीर में प्रवेश कर जाती है और उसे बचाव का अवसर तक नहीं मिल पाता। इस क्रम में हमारे देश की न्यायपालिका ने समय-समय पर यह साफ निर्देश दिया है कि सीवर सफाई के दौरान वरिष्ठ अधिकारी की उपस्थिति सुनिश्चित हो तथा कार्यस्थल पर ऑक्सीजन, आधुनिक उपकरण और आपातकालीन सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं।

हालांकि, ऐसा भी नहीं है कि सरकार इस संबंध में कुछ नहीं कर रही है। वास्तव में, सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए समय-समय पर कई पहलें की हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि 'नमस्ते' (नेशनल एक्शन प्लान फॉर मैकेनाइज्ड सैनिटेशन इकोसिस्टम) योजना और स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के तहत मशीनीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। वास्तव में, इस योजना के अंतर्गत 84,000 से अधिक सीवर और सेप्टिक टैंक कर्मियों की पहचान की गई है। इतना ही नहीं, 3,000 से अधिक शहरी स्थानीय निकायों में 100% मशीनीकृत सफाई की रिपोर्ट दी गई है तथा 2,500 से अधिक गाद निकालने वाले वाहनों के लिए वित्तीय सहायता स्वीकृत की गई है।

इसके अतिरिक्त, सफाईकर्मियों को 35 घंटे का प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान किया जा रहा है तथा पीपीई किट्स भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन्हें 'स्वच्छता उद्यमी' बनाने के उद्देश्य से ₹5 लाख तक की सब्सिडी और कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है, ताकि वे आधुनिक सक्शन मशीनें और रोबोटिक उपकरण खरीद सकें। यहां पाठकों को बताता चलूं कि सक्शन मशीनें ऐसे यांत्रिक उपकरण होते हैं, जो वैक्यूम (खिंचाव) की सहायता से सीवर या सेप्टिक टैंक के अंदर जमा गंदगी, कीचड़ (स्लज) और अपशिष्ट पदार्थ को बाहर निकालती हैं। ये मशीनें आमतौर पर ट्रक या ट्रॉली पर लगी होती हैं। साथ ही, आयुष्मान भारत योजना के तहत ₹5 लाख का स्वास्थ्य बीमा भी प्रदान किया जा रहा है। केरल जैसे राज्यों में रोबोटिक मैनहोल सफाई मशीनों का उपयोग शुरू हो चुका है। केंद्र सरकार ने साल 2023-24 के बजट में देशभर में शत-प्रतिशत मशीनीकरण को बढ़ावा देने पर बल दिया है।

फिर भी, हाल की रिपोर्टें बताती हैं कि 90% से अधिक सीवर मौतों में सफाईकर्मियों के पास कोई सुरक्षा उपकरण नहीं था। छोटे शहरों और संकरी गलियों में मशीनों की कमी के कारण आज भी मानव हस्तक्षेप जारी है। प्रशासन कई बार 'मैनुअल स्कैवेंजिंग' और 'खतरनाक सफाई' की परिभाषाओं के आधार पर जिम्मेदारी से बचने का प्रयास करता है, जिससे पीड़ितों को न्याय और मुआवजा मिलने में देरी होती है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अक्टूबर 2023 के अपने ऐतिहासिक निर्णय में सीवर सफाई के दौरान मृत्यु पर मिलने वाले मुआवजे को ₹10 लाख से बढ़ाकर ₹30 लाख कर दिया है, जबकि स्थायी विकलांगता की स्थिति में ₹20 लाख निर्धारित किया गया है। साथ ही यह स्पष्ट किया गया है कि यदि मशीनीकरण के अभाव में किसी कर्मचारी को सीवर या सेप्टिक टैंक में उतारा जाता है, तो इसके लिए संबंधित नगर निकाय के अधिकारी जिम्मेदार होंगे और उनके विरुद्ध आपराधिक मुकदमा चलाया जाएगा।

निष्कर्षतः, भारत में सीवर और सेप्टिक टैंक की सफाई के दौरान होने वाली मौतें यह स्पष्ट करती हैं कि कानूनी प्रतिबंधों और सरकारी प्रयासों के बावजूद जमीनी स्तर पर परिवर्तन अभी अधूरा है। ये घटनाएं केवल दुर्घटनाएँ नहीं, बल्कि प्रशासनिक लापरवाही, तकनीकी कमी, ठेकेदारी व्यवस्था की खामियां और सामाजिक असमानता का परिणाम हैं। जब तक पूर्ण मशीनीकरण, सख्त निगरानी, दोषियों पर कठोर कार्रवाई तथा सफाईकर्मियों के लिए सुरक्षित और सम्मानजनक कार्य-परिस्थितियाँ सुनिश्चित नहीं की जाएंगी, तब तक इस अमानवीय समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

एलपीजी की खपत 3.1 करोड़ मीट्रिक टन तक पहुंची

आयात से नहीं, ऊर्जा के क्षेत्र में नवाचार भी बदल सकता है सूरत

पुनीत उपाध्याय

अमरीका.ईरान युद्ध के कारण गैस और तेल के संकट ने भारत के लिए इस मुद्दे पर नए सिरे से सोचने को मजबूर कर दिया है क्योंकि साल दर साल गैस और तेल की डिमांड बढ़ रही है। इसलिए हमें वैकल्पिक स्त्रोतों को अपनाना ही होगा। भारत में एलपीजी की खपत 2011-12 में लगभग 1.5 करोड़ मीट्रिक टन थी जो 2024-25 में बढ़कर लगभग 3.1 करोड़ मीट्रिक टन तक पहुंच गई। इंटरनेशनल इंस्टीटूट फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (आईआईएसडी) 2026 की रिपोर्ट के अनुसार इस बढ़ोतरी का 93 फीसदी से अधिक हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा किया गया। एलपीजी की अधिकतर आपूर्ति पश्चिम एशिया के देशों से होती है। इसी वजह से भारत के घरेलू एलपीजी बाजार में वैश्विक संकट के समय तुरंत असर दिखाई देता है।

एलपीजी की कीमत बढ़ने और आपूर्ति में रुकावट के कारण लोग इलेक्ट्रिक कुकिंग उपकरणों की ओर बढ़ रहे हैं। शहरी बाजारों में इंडक्शन, इलेक्ट्रिक प्रेशर कुकर और इन्फ्रारेड स्टोव की मांग बढ़ी है। आईआईएसडी की साल 2026 की रिपोर्ट में एलपीजी पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) बिजली की लागत की तुलना की गई है। रिपोर्ट के अनुसारए वर्तमान दामों पर एलपीजी ;14.2 किग्रा 853 रुपये प्रति सिलेंडर जो सालाना लगभग 6800 से 6900 रुपये तक पहुंच जाता है। वहीं पीएनजी ;50 रूपये प्रति एससीएम. सालाना लगभग 6800 से 6900 रुपये तक पहुंच जाता है जबकि बिजली (6 रुपये प्रति किलोवाट). सालाना लगभग 5800 से 5900 रुपये तक पहुंचता है। देश में इंडक्शन, इलेक्ट्रिक प्रेशर कुकर और इन्फ्रारेड स्टोव की मांग बढ़ी है। यानी इलेक्ट्रिक कुकिंग अधिकतर घरेलू उपयोग के लिए सबसे किफायती विकल्प है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर बिजली की कीमत सात रूपये प्रति किलोवाट तक रहती है तो इलेक्ट्रिक कुकिंग एलपीजी और पीएनजी से सस्ती बनी रहती है। एलपीजी की कीमतें वैश्विक तेल बाजार से प्रभावित होती हैं। इसके विपरीत बिजली घरेलू स्तर पर उत्पन्न होती है और इसमें अंतरराष्ट्रीय उतार.चढ़ाव का असर कम होता है। हालांकि इलेक्ट्रिक कुकिंग बढ़ रही है लेकिन कुछ चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। अधिकतर इंडक्शन कुकटॉप सिंगल.जोन होते हैं जबकि एलपीजी स्टोव में कई बर्नर होते हैं। इंडक्शन कुकटॉप और संगत बर्तन महंगे हो सकते हैं।

सोलर एनर्जी के इस्तेमाल पर करना होगा विचार

कुछ साल पहले भारतीय वैज्ञानिकों ने अधिक क्षमता वाला सोलर डीसी कुकिंग सिस्टम बनाया था। सोलर डीसी कुकिंग सिस्टम की क्षमता पारंपरिक सोलर आधारित कुकिंग सिस्टम से 20 से 25 फीसदी अधिक है और यह उससे ज्यादा किफायती भी है। भारत के वैज्ञानिक और

औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और केंद्रीय यांत्रिक इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (सीएमईआरआई) द्वारा विकसित सोलर डीसी कुकिंग सिस्टम एक सौर ऊर्जा आधारित खाना बनाने की प्रणाली है जिसमें सोलर पीवी पैनल, चार्ज कंट्रोलरए,बैटरी बैंक और खाना बनाने वाला ओवन शामिल हैं। यह स्वच्छ ऊर्जा तकनीक द्वारा खाना पकाने का एक बेहतरीन तरीका है। यह इन्वर्टर.रहित सीधे उपयोग किए जाने वाला, तेज और एक समान तापमान प्रदान करता है। इसमें हर घर से हर साल होने वाले 1 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को रोकने की क्षमता है।

सीएसआईआर.सीएमईआरआई द्वारा विकसित सोलर डीसी कुकिंग सिस्टम की क्षमता पारंपरिक सोलर आधारित कुकिंग सिस्टम से 20 से 25 फीसदी अधिक है और यह उससे ज्यादा किफायती भी है। एसी.डीसी कन्वर्जन के कारण पारंपरिक प्रणाली की कार्य क्षमता घट जाती है। आसान तकनीक होने से इसे डिजाइन कर तैयार करना आसान हो जाता है और इस प्रकार छोटे उद्योगों के लिए पर्याप्त आर्थिक अवसर भी प्रदान करता है। तकनीक की लोकप्रियता बढ़ने के साथ ही रोजगार की संभावनाएं भी बढ़ने की संभावना है। शोधकर्ताओं ने कहा यह प्रणाली कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन पर लगाम लगाने में मदद करेगीए जबकि एलपीजी के उपयोग से भी कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता है। बाजार में पहुंचने पर इस तकनीक की कीमत 65 से 70 हजार रुपये के बीच होगी। अन्य सौर ऊर्जा आधारित उत्पादों की तरह यदि सरकार द्वारा सब्सिडी प्रदान की जाती है तो उत्पाद की कीमत में काफी कमी आएगी। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद ;सीएसआईआर और केंद्रीय यांत्रिक इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान ;सीएमईआरआई द्वारा विकसित सोलर डीसी कुकिंग सिस्टम का उपयोग भी 200 गीगावाट सौर ऊर्जा के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लगभग 290 मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन पर भी लगाम लगेगी।

एलपीजी गैस की जमाखोरी व कालाबाजारी पर रोक को लेकर प्रशासन सतर्क - डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

जिले में गैस, पेट्रोल एवं डीजल आपूर्ति की नियमित रूप से निगरानी

झज्जर, 24 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिले में एलपीजी, पेट्रोल-डीजल की आपूर्ति में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है। एलपीजी गैस सिलेंडर की जमाखोरी और कालाबाजारी पर रोक को लेकर शासन-प्रशासन सजग व सतर्क है, अधिकारियों द्वारा नियमित निगरानी की जा रही है। किसी प्रकार अनियमितता मिलने और अफवाह फैलाने वालों पर तत्काल नियमानुसार कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

डीसी ने कहा कि एलपीजी गैस,पेट्रोल व डीजल की आपूर्ति आवश्यकता के अनुसार हो रही है। रसोई गैस की कमी नहीं है। सभी उपभोक्ताओं से प्रशासन की सलाह है कि पैनिक होकर एलपीजी बुकिंग न करें। पहले की तरह आवश्यकता होने पर ही एलपीजी खरीदें। आमजन किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें। डीसी ने कहा कि अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि जिले में स्टॉक की निरंतर निगरानी रखें और यदि कोई कालाबाजारी करते हुए पाया जाता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

वहीं जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक राजेश्वर मुदगिल ने कहा कि जिला में गैस सिलेंडर, पेट्रोलियम पदार्थों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा किसी भी प्रकार की कालाबाजारी और अनियमितता पर रोक लगाने के लिए विभाग की ओर से विशेष निगरानी की जा रही है। इसके तहत विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है, जो जिला भर में गैस एजेंसियों और सिलेंडरों की आपूर्ति व्यवस्था पर नजर रख रहे हैं। सभी आपूर्तिकर्ताओं से प्रति दिन रिपोर्ट भी ली जा रही है।

उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि यदि गैस सिलेंडर की सप्लाई, कीमत या वितरण को लेकर कोई शिकायत होने पर सूचना तुरंत खाद्य एवं आपूर्ति विभाग को दें, ताकि समय रहते कार्रवाई कर समस्या का अविलंब समाधान किया जा सके।

बेरी माता भीमेश्वरी देवी मेले में कानूनी जागरूकता के लिए हेल्प डेस्क स्थापित : सीजेएम विशाल

बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर परिसर में हेल्प डेस्क पर आमजन को मिल रही कानूनी जानकारी

बेरी(झज्जर), 24 मार्च। धर्मनगरी बेरी में चल रहे माता भीमेश्वरी देवी नवरात्र मेले में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण झज्जर के सचिव एवं सीजेएम विशाल के मार्गदर्शन में कानूनी जागरूकता के लिए एक हेल्प डेस्क लगाया गया है। इस हेल्प डेस्क पर आमजन कानूनी जानकारी ले सकते हैं।

सीजेएम विशाल ने बताया कि हेल्प डेस्क पर हालसा व नालसा द्वारा चलाई गई विभिन्न स्कीमों के बारे मे विस्तार से जानकारी दी जा रही है। आमजन को राष्ट्रीय लोक अदालत, परमानेंट लोक अदालत, सामुदायिक मध्यस्थता केंद्र आदि के बारे मे जानकारी दी जा रही है। आमजन इस हेल्प से बहुत खुश है और ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। मंगलवार को हेल्प डेस्क के द्वारा लगभग 820 लोगों ने कानूनी जानकारी प्राप्त कर नाम दर्ज करवाया गया। इस हेल्प डेस्क पर पैरा लीगल वालंटियर सरोज देवी, प्रेम देवी, नवीन कुमारी की ड्यूटी लगाई गई है।

मुंह की बात सुने हर कोई दिल के दर्द को जाने कौन? : मनीषा राठी

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) : अक्सर हर व्यक्ति के साथ ऐसा होता है कि वह ऊपर से तो बहुत सरल दिखाई देता है, मगर उसके दिल में कोई ऐसी बात छिपी हुई होती है, जो सामने वाले व्यक्ति को दिखाई नहीं देती। कई बार व्यक्ति अपनी परिस्थितियों में ऐसा हो जाता है कि वह अपने मन की बात किसी से कह नहीं पाता। हमारे सामने हर रोज़ ऐसे लोग आते हैं, जो बाहर से हँसते हुए दिखते हैं, मगर भीतर से टूटे होते हैं। उनके चेहरे पर मुस्कान होती है, लेकिन दिल में दर्द छिपा होता है। ऐसे लोगों को पहचानना बहुत मुश्किल होता है। जब हम उनके साथ बैठते हैं, बातें करते हैं, तो लगता है कि सब कुछ ठीक है, मगर सच्चाई कुछ और ही होती है। कई बार हम अपने आसपास के लोगों को समझ नहीं पाते। हम सिर्फ उनकी बातों को सुनते हैं, उनके व्यवहार को देखते हैं, मगर उनके दिल की गहराइयों में क्या चल रहा है, यह जानने की कोशिश नहीं करते। जबकि हर इंसान चाहता है कि कोई उसे समझे, उसके दर्द को महसूस करे। ऐसे में जरूरी है कि हम अपने आसपास के लोगों के प्रति संवेदनशील बनें। सिर्फ उनकी बातों को सुनना ही काफी नहीं है, बल्कि उनके भावों को भी समझना चाहिए। कई बार कोई व्यक्ति कुछ कह नहीं पाता, मगर उसकी खामोशी बहुत कुछ कह जाती है। हमें चाहिए कि हम अपने रिश्तों में सच्चाई और समझदारी लाएं। दूसरों के दर्द को समझने की कोशिश करें। क्योंकि हर कोई मुंह की बात तो सुन लेता है, लेकिन दिल के दर्द को समझने वाला बहुत कम होता है।

जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक 25 मार्च को, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्याम सिंह राणा करेंगे बैठक की अध्यक्षता

लघु सचिवालय स्थित संवाद भवन में दोपहर 2 बजे होगी बैठक, 18 परिवादों पर होगी सुनवाई

झज्जर, 24 मार्च। आमजन की शिकायतों के त्वरित एवं स्थायी समाधान के उद्देश्य से गठित जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक 25 मार्च (बुधवार) को लघु सचिवालय स्थित संवाद भवन में आयोजित की जाएगी। बैठक दोपहर बाद 2 बजे शुरू होगी । हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा बैठक की अध्यक्षता करेंगे।

सीटीएम नमिता कुमारी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में विभिन्न विभागों से संबंधित कुल 18 परिवाद सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किए गए हैं। उन्होंने कहा कि जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठकें जनहित से जुड़े मामलों के समाधान के लिए एक सशक्त मंच के रूप में कार्य करती हैं, जिससे प्रशासनिक पारदर्शिता एवं जवाबदेही को बढ़ावा मिलता है।

ग्राम पंचायत रईया के पंच (कार्यवाहक सरपंच) को पद से हटाया

झज्जर, 24 मार्च। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने हरियाणा पंचायत राज अधिनियम, 1994 की धारा 51(1) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए झज्जर खंड के गांव रईया एक के पंच (कार्यवाहक सरपंच)को उनके पद से हटा दिया है। ग्राम पंचायत रईया के पंच(कार्यवाहक सरपंच) के खिलाफ अनियमितता बरतने का आरोप हैं, जिनकी जांच के लिए एसडीएम झज्जर को जांच अधिकारी नियुक्त किया गया है। जारी आदेश के अनुसार आरोपित पंच(कार्यवाहक सरपंच) ग्राम पंचायत की किसी भी कार्यवाही में भाग नहीं ले सकेंगे और न ही पंचायत की चल/अचल संपत्ति पर उनका कोई अधिकार रहेगा। डीसी ने हरियाणा पंचायत अधिनियम, 1994 में दिए गए प्रावधान अनुसार तुरंत प्रभाव से ग्राम पंचायत की संपत्तियों का नियंत्रण बहुमत रखने वाले पंच को सौंपने के निर्देश दिए हैं।

खंड बहादुरगढ़ के गांव छुड़ानी में 27 मार्च को रात्रि ठहराव कार्यक्रम, डीसी सुनेंगे समस्याएं

कार्यक्रम में विभागीय स्टॉल व स्वास्थ्य जांच शिविर के माध्यम से मिलेगी योजनाओं की जानकारी

झज्जर, 24 मार्च। प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की पहल पर जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक माह आयोजित किए जाने वाले रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन 27 मार्च को खंड बहादुरगढ़ के गांव छुड़ानी स्थित बाबा हरिदास मंदिर में किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल करेंगे। उपायुक्त ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश देंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशासन को गांव स्तर तक पहुंचाकर आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निवारण करना है। सीटीएम नमिता कुमारी ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने के लिए स्टॉल लगाए जाएंगे, जिससे ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में सुविधा होगी। साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा, जहां नागरिकों की जांच कर आवश्यक परामर्श दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम सरकार की महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से अधिकारियों को गांव की जमीनी स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन करने और विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करने का अवसर मिलता है। इससे शासन और जनता के बीच संवाद और अधिक सुदृढ़ होता है। उन्होंने ग्रामीणों से अपील की है कि वे इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं और अपनी समस्याएं, सुझाव व मांगें प्रशासन के समक्ष रखें, ताकि गांव के सर्वांगीण विकास को और गति मिल सके।

झज्जर के बिजली उपभोक्ताओं की आज होगी रोहतक में सुनवाई

झज्जर, 24 मार्च । उपभोक्ताओं की बिजली एवं बिजली बिल से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के निवारण के उद्देश्य से बुधवार 25 मार्च को प्रातः11 बजे से दोपहर 01 बजे तक चेयरमैन जोनल फॉर्म उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम रोहतक द्वारा चीफ इंजीनियर ओपी, प्रवर्तन परिमण्डल, राजीव गांधी विद्युत सदन, पावर हाउस, रोहतक स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सुनवाई की जाएगी। प्रवक्ता ने बताया कि इस दौरान चेयरमैन, चीफ इंजीनियर जोनल फॉर्म रोहतक स्वयं उपभोक्ताओं की समस्याएं सुनेंगे तथा उनका त्वरित निवारण सुनिश्चित करेंगे। विशेष रूप से झज्जर जिले के उपभोक्ता भी अपने बिजली बिल संबंधी मामलों को बैठक में प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि यदि उपभोक्ता अधीक्षण अभियंता, कार्यकारी अभियंता या उपमंडल अभियंता के निर्णय से संतुष्ट ना हो तो वे अपनी शिकायत चेयरमैन, जोनल फॉर्म रोहतक के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।

मेले में सफाई व्यवस्था बनाए रखना हर श्रद्धालु का कर्त्तव्य : सीईओ

– माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ व एसडीएम रेणुका नांदल ने माता भीमेश्वरी देवी मेला परिसर का जायजा

बेरी(झज्जर),24 मार्च। धर्मनगरी बेरी में चल रहे माता भीमेश्वरी देवी के चैत्र नवरात्र मेले में प्रतिदिन श्रद्धालुओं की खासी भीड़ माता दर्शन के लिए उमड़ रही है। मंगलवार को माता भीमेश्वरी देवी श्राइन बोर्ड की सीईओ व एसडीएम रेणुका नांदल ने मेले से जुड़ी सभी व्यवस्थाओं बारीकी से जायजा लिया।

एसडीएम रेणुका नांदल ने मेला परिसर में स्थित ड्यूटी पर तैनात सभी कर्मचारियों को निर्देश देते हुए कहा कि मेले के दिनों में मंदिर परिसर के सौंदर्यीकरण के साथ सफाई व्यवस्था का पूरा ध्यान रखा जाए तथा श्रद्धालुओं के लिए अस्थाई व मोबाइल शौचालयों तथा पेयजल आदि की पूरी व्यवस्था उपलब्ध रहे। उन्होंने मेले में सफाई व्यवस्था बनाएं रखने के लिए सभी कर्मचारियों को जरूरी निर्देश दिए। साथ ही सभी श्रद्धालुओं का आह्वान करते हुए मेला परिसर में सफाई व्यवस्था बनाएं रखने की अपील की। उन्होंने बताया कि मेले के दौरान अगर किसी श्रद्धालु को स्वास्थ्य संबंधी समस्या होती है तो प्राथमिक उपचार हेतु स्वास्थ्य विभाग की मंदिर परिसर में मेडिकल पोस्ट स्थापित की गई है, जहां से श्रद्धालु उपचार ले सकते हैं। नवरात्र मेला के दौरान बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए आवश्यक इंतजाम किये जा रहे हैं। मेला में सप्तमी और अष्टमी के मुख्य मेला के चलते मां भीमेश्वरी देवी के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है, जिसके चलते सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। एसडीएम ने कहा कि माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में प्रत्येक श्रद्धालु को व्यवस्था अनुरूप माता के दर्शन हो सकें, इसके लिए प्रशासन द्वारा व्यापक स्तर पर तैयारियां की गई हैं।

एसडीएम रेणुका नांदल ने बताया कि सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा मुख्य द्वार के साथ ही खोया पाया केंद्र बनाया गया है जहां मेले में अपनो से बिछड़े श्रद्धालुओं को मिलवाया जा रहा है।

हरियाणा सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों से प्रदेश विकास के नए आयाम छू रहा है – राखी शर्मा

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) भारतीय जनता पार्टी की जिला सचिव राखी शर्मा ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी एवं देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनहितैषी नीतियों की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश आज विकास और पारदर्शी शासन के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा "मेरा पानी-मेरी विरासत" योजना के तहत किसानों को 2000 रुपये प्रति एकड़ अतिरिक्त बोनस देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है, जिससे किसानों को सीधा आर्थिक लाभ मिलेगा और जल संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा।

राखी शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सैनी के नेतृत्व में सरकार के दो वर्ष पूर्ण होने पर प्रदेश ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। सरकार द्वारा ओबीसी वर्ग की क्रीमीलेयर सीमा बढ़ाई गई है, वहीं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) की आय सीमा में भी वृद्धि की गई है, जिससे अधिक लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सकेगा।

उन्होंने आगे बताया कि सरकार ने अपने पहले ही बजट में "लाडो लक्ष्मी योजना" के लिए प्रावधान किया, जिसके अंतर्गत पात्र महिलाओं को 2100 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इसके साथ ही दिव्यांग, विधवा एवं वृद्धावस्था सम्मान भत्ता में 200 रुपये की वृद्धि कर समाज के कमजोर वर्गों को राहत दी गई है।

महिला सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए बजट में 9 नए महिला थाने खोलने की घोषणा की गई है। वहीं प्रदेश के बुनियादी ढांचे को मजबूत करते हुए हरियाणा के प्रत्येक जिले को राष्ट्रीय राजमार्ग से जोड़ने का कार्य किया गया है।

राखी शर्मा ने कहा कि हरियाणा में वंदे भारत एक्सप्रेस की शुरुआत और हर जिले में मेडिकल कॉलेज स्थापित करने की दिशा में किए जा रहे प्रयास प्रदेश को स्वास्थ्य और परिवहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना रहे हैं।

उन्होंने अंत में कहा कि मुख्यमंत्री नायब सैनी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में हरियाणा निरंतर विकास की राह पर अग्रसर है और आने वाले समय में प्रदेश देश के अग्रणी राज्यों में अपनी पहचान और मजबूत करेगा।

आगरा के बुद्ध पार्क का अंतरराष्ट्रीय आकर्षण बढ़ा, विदेशी बौद्ध संतों ने सराहा सौंदर्यकरण कार्य, मुख्यमंत्री योगी को दिया साधुवाद

जापान, थाईलैंड और न्यूज़ीलैंड से आए संतों ने कहा – भारत बुद्ध की पवित्र भूमि, आगरा का बुद्ध पार्क बनेगा वैश्विक पहचान का केंद्र

आगरा, संजय साग़र सिंह। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर आगरा स्थित बुद्ध पार्क (कालिंदी बिहार रोड) में चल रहे वर्ल्ड क्लास सौंदर्यकरण कार्य को देखने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर के बौद्ध संतों का एक प्रतिनिधिमंडल आगरा पहुँचा। यह दौरा अखिल भारतीय जाटव समाज संस्था द्वारा दिए गए ज्ञापन के सकारात्मक संज्ञान के बाद संभव हुआ है।

विदेशी प्रतिनिधिमंडल में थाईलैंड, जापान और न्यूज़ीलैंड के प्रमुख बौद्ध संत शामिल रहे। समूह का नेतृत्व थाईलैंड के फ्रा आमनत इति तोचे ने किया। उनके साथ फ्रा बुन्चेरे बुद्ध सारो (न्यूज़ीलैंड), फ्रा थमानून धम्म टिन्नो (जापान) और फ्रा सोमजय चोटीटुम्मों (थाईलैंड) मौजूद रहे।

संतों ने बुद्ध पार्क में चल रहे विकास और सौंदर्यकरण कार्य की सराहना करते हुए कहा कि भारत भगवान बुद्ध की जन्म और ज्ञान की पावन भूमि है, जिसे विशेष रूप से थाईलैंड जैसे देशों में अत्यंत श्रद्धा के साथ देखा जाता है। उन्होंने विश्वास जताया कि आगरा का यह बुद्ध पार्क आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में उभरेगा।

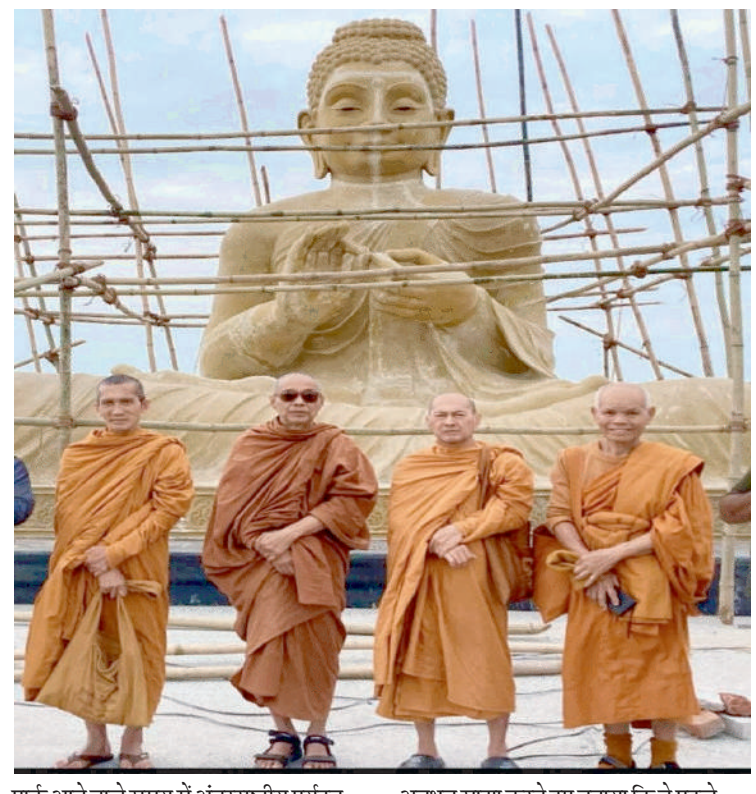

न्यूज़ीलैंड के फ्रा बुन्चेरे बुद्ध सारो ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि वे पहले एक अधिवक्ता थे और कई वर्षों तक भारत आकर बोधगया की पैदल यात्राएं करते रहे। धम्म की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने दीक्षा ली और अब अपने देश में शांति और करुणा का संदेश फैला रहे हैं।

वहीं, थाईलैंड के फ्रा सोमजय चोटीटुम्मों, जो विपश्यना में पीएचडी धारक हैं, ने बताया कि वे पहले कृषि शिक्षण संस्थान में प्रशिक्षक थे और अब लोगों को मानसिक शुद्धि और आत्मिक विकास के लिए विपश्यना का प्रशिक्षण दे रहे हैं।

जापान के फ्रा थमानून धम्म टिन्नो वर्तमान में बुद्ध के शांति और अहिंसा के संदेश का प्रसार कर रहे हैं तथा भारत में सेवा कार्य से भी जुड़े हैं। सभी संत थाईलैंड के सीरी रतनाथम्मारम बुद्ध विहार से संबद्ध हैं और उच्च स्तरीय धम्म अध्ययन प्रमाणपत्र प्राप्त कर चुके हैं।

सभी बौद्ध संतों ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ल्ड क्लास बुद्ध पार्क के विस्तार और सौंदर्यकरण के प्रयासों को सराहते हुए इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुरूप विकसित करने के लिए मुख्यमंत्री को साधुवाद दिया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय जाटव समाज संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र सिंह, प्रदेश अध्यक्ष नेत्र पाल सिंह, राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार (पूर्व अपर जिला जज), जिलाध्यक्ष भारत सिंह एडवोकेट, महानगर अध्यक्ष अर्जुन सिंह एडवोकेट सहित कई गणमान्य लोगों ने बौद्ध संतों का स्वागत और आभार व्यक्त किया।

करुणा साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान का वार्षिकोत्सव हुआ सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ –करुणा साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान के तत्वाधान में आयोजित वार्षिकोत्सव समारोह का भव्य आयोजन लखनऊ पुस्तक मेले में हुआ। इस कार्यक्रम की संस्थापिका एवं अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार एवं कवियत्री डॉ आर्यावर्ती सरोज ₹आर्या₹ प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे चयनित प्रतिभागियों को शाल,प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो एवं माल्यार्पण कर उन्हें सम्मानित किया। इस कड़ी में साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रख्यात साहित्यकार दयानंद पांडेय को साहित्य रत्न से सम्मानित किया गया। नवोदित पत्रकार में पंकज कुमार मिश्र को सम्मानित किया गया। नृत्य के लिए मितुल शर्मा को श्रेष्ठ नृत्य नटराजन (कथक) से सम्मानित किया गया। गायन के क्षेत्र में डॉ मिथिलेश तिवारी गायिका एवं शिक्षाविद को पंडित बिरजू महाराज जी संस्कृति विभाग की उपाध्यक्ष को संगीत रत्न से सम्मानित किया गया। शीला पाण्डेय वरिष्ठ साहित्यकार को साहित्य रत्न से सम्मानित किया गया। समाज सेवा हेतु सलोनी शुक्ला को समाज सेवी रत्न से सम्मानित किया गया। राजनीति के क्षेत्र में डॉली सिंह को राजनिज्ञ रत्न से सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त पत्रकारिता रत्न से आमोद श्रीवास्तव लखनऊ, शशिभूषण संज्ञा ललित पुर इसके अतिरिक्त के ई

पत्रकारों एवं सम्मिलित सभी साहित्यकारों को मूमेंटो और प्रशस्ति पत्र देकर माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया।

आमोद श्रीवास्तव

लखनऊ। करूणा साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान डॉ आर्यावर्ती सरोज आर्या अपनी माता जी के नाम से यह संस्था चलाती हैं। २१ मार्च विश्व कविता दिवस के साथ ही साथ आज आर्या का जन्मदिवस भी होता है ।इस जन्मदिन के अवसर पर सभी सुथिजनो ने उनको बधाई एवं शुभकामनाएं दी और सभी ने उनकी सफलता की कामना की तथा उनके परिवार को ढेरों खुशियां एवं मंगलकामनाएं दी। मध्य प्रदेश के रामायण केन्द्र भोपाल के निदेशक एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्य राजेश श्रीवास्तव एवं अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रख्यात पत्रकार दयानंद पांडेय जी रहे। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार महेन्द्र भीष्म, प्रख्यात एवं वरिष्ठ साहित्यकार संजीव जायसवाल, वरिष्ठ साहित्यकार एवं अपर पुलिस अधिकारी सत्या सिंह, अखिल भारतीय साहित्य परिषद के प्रांत अध्यक्ष एवं विजय तिवारी, अ. भा.सा. परिषद के प्रदेश अध्यक्ष एवं कवि निर्भय नारायण गुप्त, वरिष्ठ राजेश सिंह ₹श्रेयश₹जी रहे। संस्था के महासचिव प्रवीन कुमार, राज्य कर्मचारी संस्थान सचिवालय के अध्यक्ष एवं संस्था के अध्यक्ष डॉ दिनेश चन्द्र अवस्थी मंच पर शोभायमान रहे। कार्यक्रम का सुन्दर संचालन डॉ सुधा मिश्रा ने अपने अंदाज से सबका मन मोह लिया। मितुल शर्मा ने कथक नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया तो वहीं अपनी गायकी प्रस्तुत कर मिथिलेश जी ने सबके हृदय में स्थान बना लिया। राजीव ₹वत्सल₹ जी के पौत्र नन्हे कुणाल ₹अमृत₹ ने बांसुरी वादन से सबका दिल जीत लिया। साहित्यकार मानस मुकुल, राम प्रसाद शुक्ल, राजीव ₹वत्सल₹ आशुतोष मिश्र ₹आशु, रजनी गुप्ता, पायल लक्ष्मी सोनी, शशि नारायण मिश्र एवं अन्य साहित्यकार एवं कवि ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण बना दिया। इस मंच पर उमाशंकर तिवारी ने संस्थापिका आर्या एवं महासचिव प्रवीन कुमार को अपनी संस्था की ओर से सम्मानित किया। सभी प्रबुद्ध जनों ने अपने ज्ञान वर्धक उद्बोधन से अपने अपने विचार व्यक्त किए ।कार्यक्रम के अंत में संस्था की संस्थापिका एवं अध्यक्ष डॉ आर्यावर्ती सरोज₹आर्या₹ ने धन्यवाद ज्ञापित कर सभी का आभार व्यक्त किया।

उप निरीक्षक सत्येंद्र सिंह को जलती बस से 38 बच्चों को सुरक्षित निकालने पर उनकी बहादुरी के लिए उनको किया गया सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा, बृज यातायात एवं पर्यावरण जनजागरूकता समिति रजि उत्तर के द्वारा सम्मान समारोह होटल निविशिका इन होटल में आयोजित किया गया । सम्मान समारोह में दिनांक 18/03/2026 को बरेली-जयपुर एक्सप्रेस वे, जनपद मथुरा पर अद्वितीय साहस, तत्परता एवं कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए उत्तर प्रदेश पुलिस उप निरीक्षक सत्येंद्र सिंह ने जलती हुई स्कूल बस से 38 मासूम बच्चों को सुरक्षित बाहर निकालकर उनके जीवन की रक्षा की। उनका यह कार्य अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक है।

यह साहसिक एवं मानवता से परिपूर्ण कार्य समाज के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिस पर हम सभी को गर्व है।

ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति (रजि.), उत्तर प्रदेश के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने सत्येंद्र सिंह को फूलमाला पहनाकर एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि "आपके इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए आपको सम्मानित करते हुए हम स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं।" उन्होंने सत्येंद्र सिंह के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि वे निरंतर ऐसे ही समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी बने रहें। अखिल भारत वर्षीय यादव महासभा महिला की प्रदेश अध्यक्ष मीना यादव ने कहा कि सत्येंद्र सिंह के इस साहसिक कार्य से समाज को प्रेरणा लेनी चाहिए, जिससे समाज और अधिक संगठित एवं मजबूत बन सके। अब तक हम तीन हजार (3000) से अधिक लोगों को समाज के लिए उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित कर चुके हैं।

कार्यक्रम में चंद्र मोहन दीक्षित, दीपक सारस्वत, नरेंद्र दीक्षित, धर्मवीर सिंह, मनीष शर्मा, रमन यादव, पुष्पेंद्र चाहर लोकेन्द्र सिंह अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

रजि॰ 570/17

ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जनजागरूकता समिति रजि. उत्तर प्रदेश

सम्मान पत्र 2026

श्री सत्येंद्र सिंह जी
उप निरीक्षक, जनपद मथुरा, उत्तर प्रदेश पुलिस

मान्यवर,
आपके द्वारा दिनांक 18/03/2026 को बरेली–जयपुर एक्सप्रेसवे, जनपद मथुरा पर अद्वितीय साहस, तत्परता एवं कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए जलती हुई स्कूल बस से 38 मासूम बच्चों को सुरक्षित बाहर निकालकर उनके जीवन की रक्षा करना अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक कार्य है।
आपका यह साहसिक एवं मानवता से परिपूर्ण कार्य समाज के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिस पर हम सभी को गर्व है।
ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति (रजि.) उत्तर प्रदेश, आपके इस वीरतापूर्ण कार्य के लिए आपको सम्मानित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस करती है।
हम आपके उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप निरंतर ऐसे ही समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी बने रहें।

प्रदेश मुख्य संरक्षक
विधायक पूरन प्रकाश
(बल्देव)

संस्थापक/अध्यक्ष
विनोद दीक्षित

महिला प्रदेश अध्यक्ष
श्वेता शर्मा
(पूर्व पार्षद)

चैत्र नवरात्र पंचमी पर जीजामाता मराठा महिला मंडल का भव्य भजन-कीर्तन आयोजन

आई तुलजा भवानी मंदिर में श्रद्धा और भक्ति का माहौल, विभिन्न भजन मंडलियों ने दी प्रस्तुति

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। चैत्र नवरात्र की पंचमी के अवसर पर जीजामाता मराठा महिला मंडल द्वारा आई तुलजा भवानी मंदिर परिसर में भजन-कीर्तन एवं जस गीत का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ आई तुलजा भवानी माता को हल्दी, कुमकुम एवं पुष्प अर्पित कर तथा ओटी भरकर विधिवत किया गया। इसके बाद भक्ति संगीत का क्रम प्रारंभ हुआ, जिसमें देवरी खुर्द, गंगानगर एवं कुदुदंड की भजन मंडलियों ने अपनी प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

भजन-कीर्तन के दौरान बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित रहीं और सभी ने पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा के साथ भजनों में भाग लिया। ढोलक और मंजीरा की मधुर ध्वनि से पूरा हॉल भक्तिमय वातावरण में गुंजायमान हो उठा। इस अवसर पर जिजामाता मराठा महिला मंडल की वरिष्ठ सदस्याएं भी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। इनमें शकुंतला जाधव, भारती कदम, वसुधा कदम, श्रीमती शशि महाडिक, रमा कदम, राधा भोसले, गोदावरी भोसले, रुक्मणी भोंसले, ममता भोसले, सीमा महाडिक, सरला इंग्ले एवं प्रमिला शिंदे शामिल रहीं।

कार्यक्रम में मंडल की पदाधिकारी राखी जाधव, रोशनी महाडिक, रानी जाधव, मनीषा भोंसले, किरण मूले, रिचा ठाकरे, अनु भोसले, उषा जाधव एवं

मोना शिंदे, वर्षा शिंदे व दीपा सहित अन्य सदस्याओं की सक्रिय सहभागिता रही। पूरे आयोजन में भक्ति, उत्साह और एकजुटता का सुंदर संगम देखने को मिला।

फर्जी आईएएस बनकर शादी रचाने वाला जालौन से गिरफ्तार

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। युवती से खुद को फर्जी आईएएस अधिकारी बताकर शादी रचाने वाला आरोपी प्रीतम निषाद को कैंट पुलिस ने मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया। युवती के पिता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज होने के बाद पुलिस टीम आरोपी की तलाश में इटावा गई थी। इसी दौरान उसकी लोकेशन बुंदेलखंड के जालौन में मिली, जहां रेलवे स्टेशन के पास से उसे दबोच लिया गया। पुलिस लाइन स्थित व्हाइट हाउस में आयोजित प्रेस वार्ता में एसपी सिटी निमिष पाटील ने बताया कि आरोपी बेहद शातिर किस्म का व्यक्ति है, जो खुद को मणिपुर कैडर का आईएएस अधिकारी बताकर लोगों को गुमराह करता था। उसके पास से मोबाइल फोन, एक टैबलेट और आधार कार्ड बरामद किया गया है। शुरुआती जांच में दो शादियों की पुष्टि हुई है, जबकि अन्य मामलों की जांच जारी है। पूछताछ में आरोपी ने स्वीकार किया कि वह केवल हाईस्कूल पास है और कभी आईएएस की तैयारी नहीं की। फर्जी पहचान के सहारे वह लोगों पर रौब जमाता था और शादी करता था, लेकिन गोरखपुर में उसकी सच्चाई उजागर हो गई। आरोपी के जीजा के अनुसार प्रीतम ने केवल हाईस्कूल तक पढ़ाई की है और उसने कभी किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी नहीं की। वह फर्जी तरीके से लोगों को प्रभावित कर शादी करता रहा। हमारे घर को अपना बताकर उसने युवती से 11 मार्च को शादी की थी। शादी के अगले दिन जब वह पत्नी को लेकर इटावा पहुंचा तो लड़की पक्ष के परिजन भी वहां पहुंच गए और सच्चाई सामने आने पर हंगामा हो गया। इसके बाद मारपीट के बीच लड़की को वापस ले जाया गया। परिजनों के अनुसार, प्रीतम की पहली शादी औरैया जिले के दौलतपुर गांव में हुई थी, जिसका अभी तक तलाक नहीं हुआ है। इसके बावजूद उसने दूसरी शादी कर ली। चचेरी बहन के अनुसार शादी के दौरान किसी को शक नहीं हुआ, लेकिन बाद में विवाद खड़ा हो गया। स्थानीय लोगों के अनुसार, प्रीतम लंबे समय से अपनी पहचान छिपाकर कभी खुद को अधिकारी तो कभी बड़ी नौकरी में होने का दावा करता था। वह फर्जी आईएएस बनकर अब तक 25 शादियां करने का आरोप झेल रहा है। पुलिस का कहना है कि मामले की गहन जांच जारी है और यदि अन्य पीड़ित सामने आते हैं तो उनके आधार पर सख्त कार्रवाई की जाएगी की जाएगी।

25 मार्च अंतरराष्ट्रीय गर्भपात विरोध दिवस : गर्भपात: एक संवेदनशील विषय—स्वास्थ्य, समाज और संवेदना का संतुलन

डा अरुणिमा बनर्जी
होम्योपैथिक चिकित्सिका

गर्भपात केवल एक चिकित्सीय प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक गहन सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक विषय है। यह विषय जितना संवेदनशील है, उतना ही जिम्मेदारी से समझने और प्रस्तुत करने योग्य भी है। कई परिस्थितियों में लोग इसे केवल "अच्छा" या "बुरा" मानकर निर्णय कर लेते हैं, जबकि वास्तविकता इससे कहीं अधिक जटिल है ।हर मानव जीवन का अपना महत्व है। गर्भ में पल रहा शिशु भी जीवन की एक संभावना है, इसलिए उसके प्रति सम्मान और संवेदनशीलता रखना आवश्यक है। समाज में जीवन के प्रति आदर का भाव होना चाहिए, जिससे करुणा, सहानुभूति और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित होते हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि

गर्भपात एक चिकित्सीय प्रक्रिया है, और इसे केवल योग्य चिकित्सक की सलाह एवं देखरेख में ही किया जाना चाहिए। असुरक्षित या अवैज्ञानिक तरीके से किया गया गर्भपात महिला के लिए गंभीर शारीरिक जोखिम पैदा कर सकता है, जैसे: अत्यधिक रक्तस्राव , संक्रमण , भविष्य में गर्भधारण में कठिनाई , मानसिक तनाव और अवसाद। इसलिए यह आवश्यक है कि महिलाओं के स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए और उन्हें सही जानकारी व सुरक्षित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो।

मानसिक और भावनात्मक पहलू :- गर्भपात का निर्णय कई बार महिला के लिए भावनात्मक रूप से अत्यंत कठिन होता है। इसके बाद अपराधबोध, तनाव, चिंता या अवसाद जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसे समय में परिवार और समाज का सहयोग, सहानुभूति और समझ बहुत महत्वपूर्ण होता है ।इसलिए किसी भी महिला को गर्भपात के लिए प्रेरित करना, दबाव डालना या मजबूर करना सामाजिक रूप से अनुचित है। यह उसके अधिकारों और उसकी गरिमा के विरुद्ध है। समाज का कर्तव्य है कि महिलाओं को सही मार्गदर्शन दे, उन्हें शिक्षा और जागरूकता प्रदान करे और अनचाहे गर्भ से बचाव के उपाय के बारे में जानकारी दे और

निर्णय लेने में उनका सम्मान और समर्थन करे।

गर्भपात का विषय केवल "सही या गलत" का नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, अधिकार, और मानवीय संवेदना का है ।हमें एक ऐसा समाज बनाना चाहिए जहाँ जीवन का सम्मान हो, महिलाओं के स्वास्थ्य और अधिकार सुरक्षित हों और हर निर्णय सहानुभूति व समझ के साथ लिया जाए।

फर्जी दस्तावेजों के जरिए खातों से करोड़ों का लेनदेन

गोरखपुर। थाना एम्स पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 7 शातिर अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। ये आरोपी लोगों को लोन दिलाने और सरकारी योजनाओं का लालच देकर उनके बैंक खातों का दुरुपयोग कर करोड़ों रुपये का अवैध लेनदेन करते थे। पुलिस ने इनके कब्जे से 10 मोबाइल फोन, 1 टैबलेट, 2 लैपटॉप, 8 कूटरचित मोहर, 28 हस्ताक्षरित चेक, 4 पासबुक, 3 एटीएम कार्ड और 2 चेकबुक बरामद किए हैं।

मामले का खुलासा उस समय हुआ जब एक पीड़ित ने थाना एम्स में शिकायत दर्ज कराई कि लोन दिलाने के नाम पर आरोपियों ने उसके बैंक खातों के दस्तावेज, एटीएम कार्ड और सिम कार्ड ले लिए। बाद में खातों में संदिग्ध लेन देन होने पर खाते फ्रीज हो गए। पूछताछ करने पर आरोपियों ने पीड़ित को जान से मारने की धमकी भी दी।

जांच के दौरान पुलिस ने पाया कि आरोपी गिरोह बनाकर जरूरतमंद लोगों को निशाना बनाते थे। वे पहले लोन या सरकारी योजना का झांसा देकर खाताधारकों से उनके बैंकिंग दस्तावेज हासिल कर लेते थे, फिर उन्हीं खातों का इस्तेमाल साइबर ठगी के पैसों के ट्रांजैक्शन में करते थे। इसके अलावा, आरोपी कूटरचित स्टैंप और दस्तावेजों के जरिए फर्जी लोन प्रोसेस भी तैयार करते थे। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों में ध्रुव साहनी, सूरज सिंह, अजय उपाध्याय, अखंड प्रताप सिंह उर्फ विक्की, बृजेन्द्र कुमार सिंह, अभिषेक कुमार यादव और अमर कुमार निषाद शामिल हैं। सभी के खिलाफ थाना एम्स में संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि मामले की गहन जांच जारी है और गिरोह से जुड़े अन्य लोगों की तलाश की जा रही है।

रक्षा तैयारियों पर फोकस: राजनाथ सिंह ने पश्चिम एशिया की स्थिति की समीक्षा की, एकीकृत रोडमैप पर जोर

संगिनी घोष

वैश्विक तनाव के बीच रणनीतिक तैयारी को मजबूत करने पर जोर

पश्चिम एशिया में बदलते भू-राजनीतिक हालात के बीच रक्षा मंत्री Rajnath Singh ने भारत की रक्षा तैयारियों पर इसके प्रभाव की समीक्षा के लिए एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की। इस बैठक में वरिष्ठ अधिकारियों ने संभावित खतरों का आकलन किया और सुरक्षा रणनीतियों को नए वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप ढालने पर चर्चा की।

यह समीक्षा दर्शाती है कि भारत अपनी सुरक्षा नीति को अधिक सतर्क और भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा में काम कर रहा है।

आधुनिक युद्ध से सीखने की आवश्यकता

बैठक के दौरान रक्षा मंत्री ने पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्षों से परिचालन और तकनीकी सबक सीखने की आवश्यकता पर जोर दिया। आधुनिक युद्ध अब तकनीक, साइबर क्षमता और नई रणनीतियों से प्रभावित हो रहा है, जिसे ध्यान में रखते हुए भारत को अपनी तैयारियों को मजबूत करना होगा।

अधिकारियों ने इन सबक को प्रशिक्षण और रणनीति में शामिल करने की जरूरत भी बताई।

अगले दशक के लिए दृष्टि

इस बैठक का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष अगले दस वर्षों के लिए एक व्यापक और एकीकृत रोडमैप तैयार करने की आवश्यकता रहा। Rajnath Singh ने कहा कि इसमें सीखे गए सबक, चुनौतियां और अवसर सभी को शामिल किया जाना चाहिए।

इसका उद्देश्य ऐसी रणनीति बनाना है जो वर्तमान और भविष्य दोनों चुनौतियों का सामना कर सके।

आत्मनिर्भरता पर विशेष जोर

बैठक में आत्मनिर्भरता को रक्षा नीति का प्रमुख आधार बताया गया। रक्षा मंत्री ने कहा कि स्वदेशी क्षमताओं को मजबूत करना न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरी है, बल्कि इससे संकट के समय बाहरी निर्भरता भी कम होगी।

यह समीक्षा क्यों महत्वपूर्ण है

मेरे नजरिए से देखें तो यह कदम दर्शाता है कि सरकार बदलते वैश्विक हालात के अनुसार अपनी रक्षा रणनीति को सक्रिय रूप से अपडेट कर रही है।

हालांकि, इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इन योजनाओं को जमीन पर कितनी प्रभावी तरीके से लागू किया जाता है।

इस दृष्टि से यह पहल बताती है कि आज की तैयारी केवल संसाधनों की नहीं, बल्कि दूरदर्शिता की भी मांग करती है।

मुख्य बिंदु

* रक्षा मंत्री Rajnath Singh ने पश्चिम एशिया की स्थिति की समीक्षा की
* परिचालन और तकनीकी सबक सीखने पर जोर
* अगले दशक के लिए एकीकृत रक्षा रोडमैप की आवश्यकता
* आत्मनिर्भरता और स्वदेशी क्षमताओं पर फोकस
* बदलते वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य के अनुसार रणनीति तैयार करने पर जोर

आगे की राह

विशेषज्ञों का मानना है कि वैश्विक संघर्षों का लगातार अध्ययन, तकनीकी निवेश और घरेलू रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने से भारत की सुरक्षा तैयारियां और मजबूत होंगी। आने वाले समय में नवाचार और बेहतर समन्वय पर आधारित रणनीतियां अहम भूमिका निभा सकती हैं।

पक्षी देखने से मस्तिष्क का पुनः आकार बदल सकता है

● विजय गर्ग

तेज गति से चलने वाले डिजिटल उत्तेजना के प्रभुत्व वाले युग में, पक्षियों को देखने की शांत और धैर्यपूर्ण गतिविधि, जिसे अक्सर एक साधारण शौक के रूप में देखा जाता है, अब तंत्रिका वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित कर रही है। उभरते शोध से पता चलता है कि पक्षियों को देखना मन को आराम देने के अलावा और भी बहुत कुछ करता है; यह वास्तव में मस्तिष्क को नया रूप दे सकता है, संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ा सकता है और यहां तक कि आयु-संबंधी गिरावट से भी बचा सकता है।

हाल के वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि अनुभवी पक्षी निरीक्षकों के मस्तिष्क में मापनीय संरचनात्मक परिवर्तन होते हैं। शुरुआती लोगों की तुलना में, विशेषज्ञ पक्षीविद अधिक कॉम्पैक्ट और कुशल मस्तिष्क क्षेत्र दिखाते हैं जो ध्यान और धारणा से जुड़े होते हैं। ये परिवर्तन केवल प्रतीकात्मक नहीं हैं, वे सीधे तौर पर किसी व्यक्ति की पक्षियों को सटीक रूप से पहचानने की क्षमता से संबंधित हैं, यहां तक कि अपरिचित प्रजातियां भी।

यह घटना न्यूरोप्लास्टिसिटी का उदाहरण है, जिसमें मस्तिष्क की सीखने और अनुभव के माध्यम से स्वयं को पुनर्गठित करने की उल्लेखनीय क्षमता होती है। पक्षी देखने के लिए कौशल का एक अनूठा संयोजन आवश्यक है: तीव्र दृश्य अवलोकन, निरंतर ध्यान, पैटर्न पहचान और स्मृति। समय के साथ, इन कौशलों का अभ्यास करने से तंत्रिका पथ मजबूत होते हैं, जिससे मस्तिष्क अधिक कुशल और अनुकूलनीय हो जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि पक्षी देखने के लाभ कौशल विकास से भी आगे बढ़ जाते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया है कि पक्षी-दर्शन से प्राप्त संज्ञानात्मक लाभ एक ज्ञानात्मक रिजर्व के रूप में कार्य कर सकते हैं, जो मस्तिष्क की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने में मदद करता है। जैसे-जैसे लोग बड़े होते हैं, मेमोरी और प्रोसेसिंग स्पीड जैसे कार्य आमतौर पर कम हो जाते हैं। हालाँकि, पक्षी देखने जैसी मानसिक उत्तेजक गतिविधियों में लगे व्यक्ति इन क्षमताओं को अधिक समय तक बनाए रखते हैं।

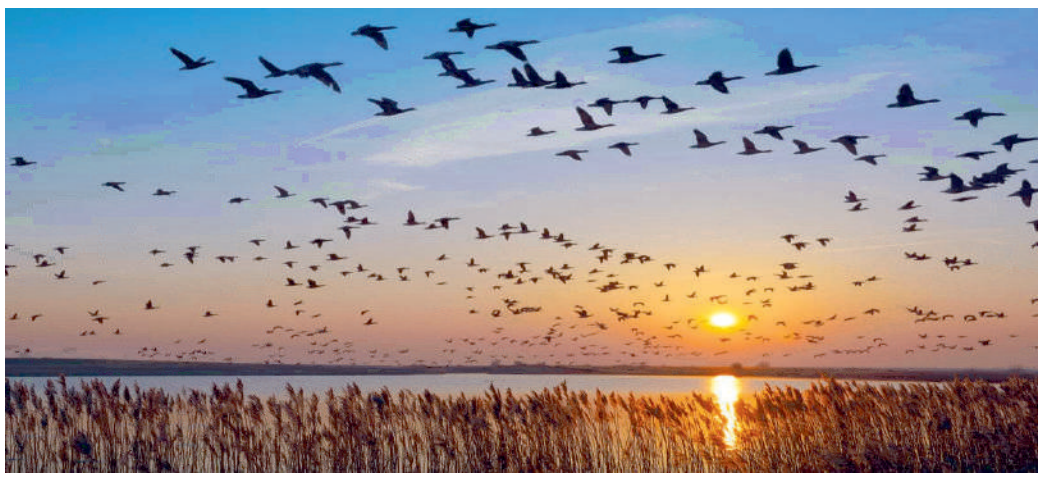

यह गतिविधि मानसिक स्वास्थ्य में भी योगदान देती है। अध्ययनों से पता चलता है कि पक्षियों को देखने से मनोवैज्ञानिक परेशानी कम होती है और समग्र मनोदशा में सुधार होता है। प्रकृति में रहना, पक्षियों का गीत सुनना और वर्तमान क्षण पर ध्यान केंद्रित करना तनाव के स्तर को कम कर सकता है और भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा दे सकता है।

पक्षी देखने की क्षमता को विशेष रूप से शक्तिशाली बनाता है। इसके लिए महंगे उपकरण या विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है, बस जिज्ञासा, धैर्य और प्राकृतिक दुनिया का अवलोकन करने की इच्छा। चाहे वह ग्रामीण परिदृश्य हो या शहरी पार्क, कोई भी व्यक्ति पक्षियों की खोज में शामिल हो सकता है और इसके संज्ञानात्मक और भावनात्मक लाभ प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्षतः, पक्षी देखना एक मनोरंजक मनोरंजन से कहीं अधिक है; यह एक मस्तिष्क-वर्धक गतिविधि है जिसका गहन वैज्ञानिक आधार है। ध्यान को तीव्र करके, स्मृति को बढ़ाकर और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर, यह दर्शाता है कि कैसे प्रकृति के साथ सरल बातचीत मानव मस्तिष्क में सार्थक परिवर्तन ला सकती है। प्रकृति से अधिकाधिक अलग होने वाली दुनिया में, शायद स्वस्थ मन का मार्ग आसमान की ओर देखने और पक्षियों के गीतों को सुनने में है। पक्षी-दर्शन एक शक्तिशाली, प्राकृतिक प्रकार का माइंडफुलनेस है। यह लोगों को बाहर निकलने, धीमा होने और वर्तमान क्षण पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिसे तनाव और चिंता को कम करने के लिए व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। दो कारक जो पुराने होते हैं, मस्तिष्क के दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। हालांकि यह नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त नींद जैसी अन्य स्वस्थ आदतों की आवश्यकता को प्रतिस्थापित नहीं करता है, लेकिन इससे यह संकेत मिलता है कि दूरबीन पहनना उम्र बढ़ने के साथ अपने दिमाग को तेज रखने का सबसे अधिक बौद्धिक रूप से उत्तेजक (और सस्ता) तरीका हो सकता है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

भारतीय ज्ञान परम्परा: प्रभाव और विकास

डॉ विजय गर्ग

भारत की ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परम्पराओं में से एक रही है। यह परम्परा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—आध्यात्म, विज्ञान, समाज, शिक्षा और संस्कृति—को गहराई से प्रभावित करती रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ने मानव जीवन को संतुलित, नैतिक और समग्र दृष्टि से देखने का मार्ग प्रशस्त किया।

प्राचीन आधार और स्वरूप

भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ें वेद, उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में निहित हैं। इन ग्रंथों में केवल धार्मिक विचार ही नहीं, बल्कि जीवन के गहन दर्शन, नैतिकता, कर्तव्य और सामाजिक व्यवस्था का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा का प्रसार हुआ, जहाँ विद्यार्थी प्रकृति के सान्निध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त करते थे।

विज्ञान और तकनीकी योगदान

भारतीय ज्ञान परम्परा ने विज्ञान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट्ट ने गणित और खगोलशास्त्र में क्रांतिकारी खोजें कीं, जबकि सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा (सर्जरी) की नींव रखी। आयुर्वेद, योग और ज्योतिष जैसे विषयों ने स्वास्थ्य और जीवनशैली को संतुलित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समाज और संस्कृति पर प्रभाव

भारतीय ज्ञान परम्परा ने समाज को नैतिक मूल्यों—सत्य, अहिंसा, करुणा और सहिष्णुता—की शिक्षा दी। महात्मा गांधी ने इन्हीं मूल्यों के आधार पर स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। इस परम्परा ने विविधता में एकता की भावना को मजबूत किया और विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित किया।

मध्यकालीन और आधुनिक विकास

मध्यकाल में भक्ति और सूफी आंदोलनों ने ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया। संतों और कवियों ने सरल भाषा में आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश दिए। आधुनिक काल में भारतीय ज्ञान परम्परा ने नई शिक्षा प्रणाली, विज्ञान और तकनीक के साथ समन्वय स्थापित किया।

आज, भारत में नई शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः शिक्षा का हिस्सा बनाया जा रहा है। योग, आयुर्वेद और पारंपरिक ज्ञान को वैश्विक स्तर पर भी पहचान मिल रही है।

वर्तमान में महत्व और भविष्य

आज के तकनीकी युग में भारतीय ज्ञान परम्परा और भी प्रासंगिक हो गई है। यह हमें केवल जानकारी नहीं, बल्कि सही जीवन जीने की कला सिखाती है। पर्यावरण संरक्षण, मानसिक शांति और सामाजिक संतुलन जैसे मुद्दों पर यह परम्परा मार्गदर्शन प्रदान करती है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा भी है। इसका प्रभाव व्यापक और स्थायी है। यदि हम इसे आधुनिक विज्ञान और शिक्षा के साथ जोड़कर आगे बढ़ाएँ, तो यह न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

प्रतियोगी परीक्षाओं के दबाव में कमजोर होती शैक्षणिक नींव

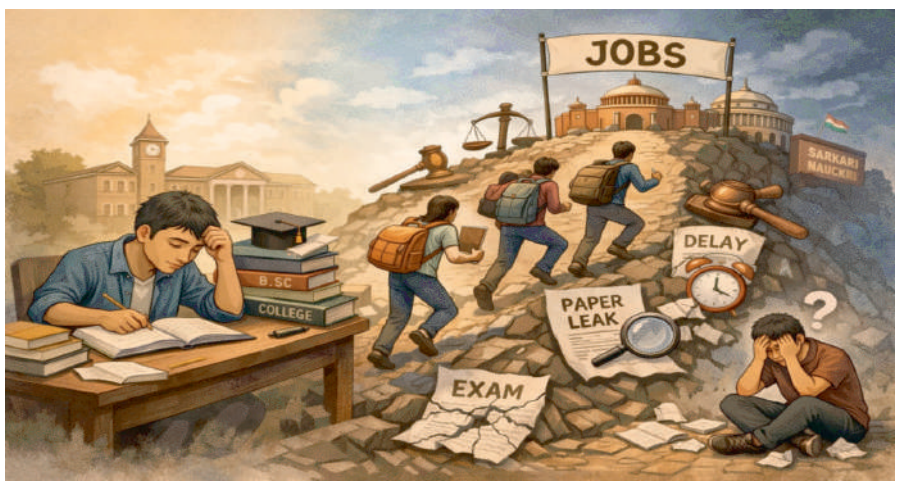

- डॉ. प्रियंका सौरभ

आज का युवा एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहां अवसरों की कोई कमी नहीं है, लेकिन उन अवसरों तक पहुंचने का रास्ता पहले से कहीं अधिक जटिल और प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है। विशेष रूप से सरकारी नौकरियों के क्षेत्र में प्रतियोगी परीक्षाओं की बढ़ती संख्या, उनकी लंबी प्रक्रियाएं और अनिश्चित परिणामों ने छात्रों और अभिभावकों दोनों को गहरी दुविधा में डाल दिया है। सीईटी (सामान्य पात्रता परीक्षा) को इसी संदर्भ में एक बड़ी उम्मीद के रूप में प्रस्तुत किया गया था, लेकिन बीते वर्षों के अनुभव इस उम्मीद पर गंभीर प्रश्न खड़े करते हैं।

हरियाणा में 2019 से 2024 के बीच पांच वर्षों की अवधि में इस परीक्षा की प्रक्रिया अपेक्षित गति नहीं पकड़ सकी। स्थिति यह रही कि इस दौरान केवल एक ही परीक्षा पूरी तरह संपन्न हो पाई, और उससे जुड़ी कुछ भर्तियां आज भी न्यायिक प्रक्रिया में उलझी हुई हैं। 2024-25 के चक्र में भी अभी तक केवल प्रारंभिक परीक्षा ही आयोजित हो सकी है। जिस धीमी गति से पूरी प्रक्रिया आगे बढ़ रही है, उसे देखते हुए यह आशंका निराधार नहीं है कि अंतिम परिणाम आने में अभी लंबा समय लग सकता है।

लेकिन यह समस्या केवल हरियाणा तक सीमित नहीं है। देश के लगभग सभी राज्यों में सरकारी भर्ती प्रक्रियाओं की स्थिति कमोबेश ऐसी ही है। उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तमिलनाडु, कर्नाटक और यहां तक कि पूर्वोत्तर राज्यों में भी भर्ती परीक्षाओं में देरी, पेपर लीक, न्यायिक विवाद और परिणामों में विलंब जैसी समस्याएं लगातार सामने आती रही हैं। कई राज्यों में परीक्षाएं वर्षों तक आयोजित ही नहीं होतीं, और जब होती हैं तो उनकी प्रक्रिया इतनी लंबी होती है कि उम्मीदवारों की उम्र और धैर्य दोनों की परीक्षा लेने लगती है।

इसका सबसे बड़ा असर युवाओं के मानसिक, शैक्षणिक और सामाजिक जीवन पर पड़ता है। हर वर्ष लाखों छात्र स्नातक होकर रोजगार की तलाश में निकलते हैं, लेकिन उपलब्ध सरकारी पदों की संख्या बेहद सीमित रहती है। उदाहरण के तौर पर, यदि पूरे देश में लाखों अभ्यर्थी किसी एक परीक्षा में बैठते हैं, तो चयनित होने वालों की संख्या हजारों में ही सिमट जाती है। ऐसे में केवल सरकारी नौकरी को ही अंतिम लक्ष्य मान लेना और उसी पर निर्भर रहना एक अत्यंत जोखिमपूर्ण निर्णय बन जाता है।

इस पूरे परिदृश्य का सबसे चिंताजनक पहलू "नॉन-अटेंडिंग" कल्चर का तेजी से फैलना है। देश के लगभग हर राज्य में यह प्रवृत्ति देखी जा रही है कि छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के नाम पर कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की नियमित कक्षाओं से दूरी बना लेते हैं। वे यह मान लेते हैं कि सफलता पाने के लिए उन्हें पूरी तरह से पारंपरिक शिक्षा प्रणाली से अलग होना होगा। लेकिन यह सोच धीरे-धीरे उनके भविष्य के लिए घातक सिद्ध हो रही है।

वास्तव में, कॉलेज जीवन केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं होता। यह वह समय होता है जब एक छात्र का बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास होता है। कक्षा में भागीदारी, शिक्षकों से संवाद, समूह चर्चा, प्रस्तुतियां और सह-पाठयक्रम गतिविधियां—ये सभी मिलकर एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती हैं। जब छात्र इन सभी से दूर हो जाते हैं, तो वे केवल विषय ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन के आवश्यक कौशलों से भी वंचित रह जाते हैं।

नॉन-अटेंडिंग कल्चर का एक और गंभीर दुष्प्रभाव यह है कि छात्रों की शैक्षणिक नींव कमजोर हो जाती है। वे विषयों को गहराई से समझने के बजाय केवल परीक्षा पास करने तक सीमित रह जाते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि प्रतियोगी परीक्षाओं में असफल होने के बाद उनके पास न तो मजबूत अकादमिक रिकॉर्ड होता है और न ही कोई वैकल्पिक करियर विकल्प। परिणामस्वरूप वे आत्मविश्वास खो बैठते हैं और मानसिक तनाव का शिकार हो जाते हैं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि आज का समय तकनीकी रूप से अत्यंत उन्नत है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। देश के हर कोने में ऑनलाइन कोचिंग, वीडियो लेक्चर, डिजिटल नोट्स, टेस्ट सीरीज और वर्चुअल क्लासरूम की सुविधा उपलब्ध है। ऐसे में यह कहना कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कॉलेज छोड़ना आवश्यक है, पूरी तरह से गलत धारणा है। छात्र अपनी नियमित पढ़ाई के साथ-साथ भी प्रभावी ढंग से तैयारी कर सकते हैं।

यदि एक संतुलित और व्यावहारिक रणनीति अपनाई जाए, तो छात्र अपनी स्नातक शिक्षा के तीन वर्षों का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते हैं। प्रथम वर्ष में उन्हें अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करते हुए सामान्य ज्ञान, समाचार पत्रों और समसामयिक घटनाओं से जुड़ना चाहिए। यह उनकी बौद्धिक नींव को मजबूत करता है। द्वितीय वर्ष में वे गणित, रीजनिंग और भाषा जैसे विषयों पर अपनी पकड़ मजबूत कर सकते हैं। साथ ही, एनसीईआरटी की पुस्तकों के माध्यम से अपनी मूलभूत अवधारणाओं को स्पष्ट कर सकते हैं। अंतिम वर्ष तक पहुंचते-पहुंचते उन्हें यह स्पष्ट निर्णय लेना चाहिए कि वे उच्च शिक्षा की ओर बढ़ना चाहते हैं या प्रतियोगी परीक्षाओं की दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं।

देश के विभिन्न राज्यों में उच्च शिक्षा और निजी क्षेत्र के अवसर भी तेजी से बढ़ रहे हैं। आईटी, मैनेजमेंट, हेल्थकेयर, स्टार्टअप्स, स्किल-बेस्ड जॉब्स और फ्रीलांसिंग जैसे क्षेत्रों में युवाओं के लिए नए दरवाजे खुल रहे हैं। ऐसे में यह आवश्यक है कि छात्र केवल सरकारी नौकरियों तक ही अपने विकल्प सीमित न रखें, बल्कि अपने कौशल और रुचि के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में संभावनाएं तलाशें।

अभिभावकों की भूमिका इस पूरे परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। अक्सर देखा जाता है कि बच्चे अपने दोस्तों या समाज के दबाव में आकर नॉन-अटेंडिंग रहने का निर्णय लेते हैं और अभिभावक उन पर भरोसा करके उन्हें इसकी अनुमति दे देते हैं। लेकिन यह आवश्यक है कि अभिभावक इस निर्णय के दीर्घकालिक प्रभावों को समझें और अपने बच्चों को संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करें। केवल एक परीक्षा या एक करियर विकल्प पर निर्भर रहना समझदारी नहीं है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में सफलता उन्हीं को मिलती है, जो लचीलापन अपनाते हैं और अपने लिए कई विकल्प खुले रखते हैं। एक छात्र के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी शैक्षणिक योग्यता को मजबूत बनाए, साथ ही कौशल विकास पर भी ध्यान दे। संचार कौशल, तकनीकी दक्षता, समस्या समाधान क्षमता और आत्मविश्वास—ये सभी गुण उसे जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में सहायता करते हैं।

अंततः यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि सीईटी (सामान्य पात्रता परीक्षा) या कोई भी प्रतियोगी परीक्षा केवल एक अवसर है, न कि जीवन का अंतिम लक्ष्य। इसे जीवन का एक हिस्सा मानकर चलना चाहिए, न कि संपूर्ण आधार। यदि छात्र अपनी पढ़ाई, कौशल और व्यक्तित्व विकास पर समान रूप से ध्यान दें, तो वे न केवल प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

समय की मांग यही है कि हम एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं—जहां तैयारी भी हो और शिक्षा भी, लक्ष्य भी हो और विकल्प भी। तभी हमारे युवा न केवल नौकरी की दौड़ में सफल होंगे, बल्कि एक मजबूत, आत्मनिर्भर और जागरूक नागरिक के रूप में देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

बातें बची हैं, पर बातचीत क्यों खत्म हो रही है? 'मैं' की छोटी-सी जीत, 'हम' की बड़ी हार बन जाती है

कृति आरके जैन

आज हमारे पास शब्दों की कोई कमी नहीं है, कमी है उस सच्चाई, उस गहराई और उस आत्मीय स्पर्श की, जो शब्दों को साधारण 'बात' से उठाकर सच्ची बातचीत में बदल देता है। हम दिन भर अनगिनत लोगों से बात करते हैं, संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं, प्रतिक्रियाएँ देते हैं—फिर भी जब रात की खामोशी उतरती है, तो भीतर एक अजीब-सा खालीपन रह जाता है। यह खालीपन यूँ ही नहीं जन्म लेता, यह इस बात का साक्षी है कि 'बातें' तो बहुत हुईं, पर 'बातचीत' कहीं खो गई। क्योंकि बातचीत केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि दो मनों, दो भावनाओं और दो आत्माओं का सच्चा जुड़ाव है—और जब यह जुड़ाव नहीं बनता, तो शब्द केवल शोर बनकर रह जाते हैं।

आज बातचीत के खत्म होने की सबसे बड़ी वजह यह है कि हमने उसे एक औपचारिकता, एक आदत और एक रूटीन बना दिया है। "क्या हाल है?", "सब ठीक?", "खाना खाया?"—ये सवाल जरूरी जरूर हैं, लेकिन ये रिश्तों में जीवन नहीं भरते, ये सिर्फ उनकी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। असली बातचीत तब जन्म लेती है जब हम सतह से नीचे उतरते हैं, जब हम सच में जानना चाहते हैं कि सामने वाला कैसा है, उसके भीतर क्या चल रहा है, कौन-सी बातें उसे चुप कर रही हैं। और सबसे जरूरी—जब हम इन सवालों के जवाब सुनने के लिए ठहरते हैं, बिना जल्दबाजी, बिना औपचारिकता, पूरी संवेदनशीलता के साथ।

हमारी सबसे बड़ी कमी यही है कि हम सुनना भूल गए हैं—हम सिर्फ जवाब देने के लिए इंतज़ार करते हैं। जब कोई अपनी बात कह रहा होता है, तब हमारा ध्यान उसकी भावनाओं पर नहीं, बल्कि अपने अगले शब्दों पर होता है। यही कारण है कि सामने वाला सुना हुआ नहीं, बल्कि अनदेखा और अनसुना महसूस करता है। यही अनदेखापन धीरे-धीरे एक गहरी दूरी में बदल जाता है, जो बिना शोर किए रिश्तों को कमजोर कर देता है और अंततः बातचीत को खत्म कर देता है। शायद अब समय आ गया है कि हम फिर से सीखें—कम बोलना नहीं, बल्कि सच में सुनना और दिल से जुड़ना।

डर और असुरक्षा भी बातचीत को गहराई तक पहुँचने से रोक देते हैं। हम अपनी सच्ची भावनाओं, अपने भीतर छिपे सच और अपनी नाजुक संवेदनाओं को व्यक्त करने से कतराते हैं—कहीं हमें गलत न समझ लिया जाए, कहीं हमारी कमजोरी उजागर न हो जाए, कहीं हमारी छवि टूट न जाए। इसलिए हम सुरक्षित शब्दों का सहारा लेते हैं, सतही बातें करते हैं, और अपने असली भावों को भीतर ही दबाए रखते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि जहाँ जोखिम नहीं होता, वहाँ सच्ची गहराई भी नहीं होती। बातचीत तब जीवंत और अर्थपूर्ण बनती है, जब हम अपने भीतर की सच्चाई को, अपनी अपूर्णताओं और असहजताओं के साथ, साहसपूर्वक सामने रखने का हौसला करते हैं।

तकनीक ने बातचीत को तेज़, सुविधाजनक और हर पल उपलब्ध जरूर बना दिया है, लेकिन उसे गहराई और संवेदनशीलता नहीं दे पाई। टेक्स्ट, इमोजी और छोटे-छोटे संदेशों ने भावनाओं को सीमित और संक्षिप्त कर दिया है। हम तुरंत जवाब तो दे देते हैं, लेकिन उन शब्दों को महसूस करने, उन्हें समझने और उनके पीछे छिपे भावों को पकड़ने का समय नहीं लेते। जबकि सच्ची बातचीत को समय चाहिए, ठहराव चाहिए, और एक ऐसा धैर्य चाहिए जिसमें शब्दों के बीच की खामोशी भी सुनी जा सके। जब हर चीज़ जल्दबाज़ी में हो, तो बातचीत भी उसी जल्दबाज़ी की शिकार हो जाती है—और यही कारण है कि आज हम एक-दूसरे से जुड़े तो हैं, लेकिन वास्तव में समझे नहीं जाते।

एक और गहरी और अक्सर अनदेखी वजह है—अहंकार। छोटे-छोटे मुद्दों पर हम चुप्पी ओढ़ लेते हैं, यह सोचकर कि "पहले वह क्यों नहीं बोलता?", "मैं ही क्यों पहल करूँ?" यह 'मैं' और 'मेरी' की भावना ही बातचीत का सबसे बड़ा अवरोध बन जाती है। जबकि सच्ची बातचीत तब जीवित रहती है, जब कोई एक झुकने का साहस करता है, जब कोई एक अपने अहंकार से ऊपर उठकर पहला कदम बढ़ाता है। लेकिन जब दोनों ओर अहंकार की दीवार खड़ी हो जाती है, तब शब्द खत्म नहीं होते—बस उनके बीच का रास्ता बंद हो जाता है, और वहीं से बातचीत धीरे-धीरे दम तोड़ने लगती है।

आज का जीवन इतना तेज़, इतना व्यस्त और इतना उलझा हुआ हो गया है कि हमने बातचीत को अपनी प्राथमिकताओं की सूची से लगभग बाहर ही कर दिया है। काम, लक्ष्य, महत्वाकांक्षाएँ और जिम्मेदारियों के बीच हम बातचीत को बार-बार "बाद में" टालते रहते हैं—जैसे वह कोई गैर-ज़रूरी चीज़ हो। लेकिन सच्चाई यह है कि रिश्ते 'बाद में' नहीं चलते, वे केवल 'अभी' में ही जीवित रहते हैं। उन्हें समय चाहिए, सच्चा ध्यान चाहिए, और सबसे बढ़कर—हमारी पूरी उपस्थिति चाहिए। जब हम किसी के साथ होते हुए भी अपने विचारों, फोन या काम में उलझे रहते हैं, तो बातचीत धीरे-धीरे अपनी सांसें खोने लगती है और अनजाने में ही रिश्तों की गर्माहट कम होने लगती है।

बातचीत को बचाने के लिए हमें अपने भीतर लौटना होगा—थोड़ा ठहरकर, थोड़ा समझकर। हमें यह गहराई से समझना होगा कि बातचीत कोई साधारण तकनीक नहीं, बल्कि एक बेहद संवेदनशील और जीवंत प्रक्रिया है—जिसमें समय, धैर्य, ईमानदारी और पारस्परिक समझ की सच्ची जरूरत होती है। हमें फिर से सीखना होगा—पूरी एकाग्रता के साथ सुनना, सच्चाई और स्पष्टता से बोलना, और बिना किसी शर्त के एक-दूसरे को स्वीकार करना। क्योंकि जब बातचीत खत्म होती है, तो रिश्ते अचानक नहीं टूटते—वे धीरे-धीरे भीतर से खोखले हो जाते हैं। और एक दिन, सिर्फ शब्द रह जाते हैं बातचीत नहीं।

बलिदान दिवस 25 मार्च : गणेश शंकर विद्यार्थी : पत्रकारिता का गौरवमय किरीट

प्रमोद दीक्षित मलय

अंग्रेजी शासन से मुक्ति और स्वराज्य प्राप्ति के लिए 1857 से आरम्भ हुआ स्वाधीनता संघर्ष 1947 में पूर्ण हुआ। इस यात्रा में देश के विविध क्षेत्रों से हजारों नर-नारियों ने योगदान दिया है। अपना सर्वस्व समर्पण करके मां भारती के गौरव एवं गरिमा में वृद्धि की है। भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में समाज जागरण करते हुए राष्ट्रीय एकात्मकता का भाव भरने के क्रम में पत्र-पत्रिकाओं की भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस शृंखला में कानपुर से प्रकाशित साप्ताहिक राष्ट्रीय समाचार पत्र 'प्रताप' का नाम सर्वप्रथम अंकित है जो अपने तेज-ओज, गाम्भीर्य और राष्ट्रवादी तेवर के कारण भारतीय जन मानस का कंठहार पत्र बन सतत नवल उत्साह का संचार कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्राण फूंकता रहा तो वहीं अंग्रेजों की आंखों में किरकिरी बन उनके हृदय को कचोटता भी रहा। 'प्रताप' के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी अपनी अग्निधर्मी लेखनी और उग्र राष्ट्रवादी लेखों के कारण अंग्रेजी सत्ता के कोप भाजन भी बने, पर वह अपने साधना पथ से किंचित भी न डिगे, न रुके बल्कि कहीं अधिक प्रज्वल प्रखर निर्भय होकर किसानों, मजदूरों और आमजन की कठिनाईयों को स्वर देते रहे, अंग्रेजी दमनकारी नीति का विरोध करते रहे।

वह हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। वे समान भाव से दोनों पक्षों की एकजुटता के लिए धरातल तैयार करते रहे। किंतु समय का कैसा विरोधाभास है कि पांथिक एकता, सामाजिक सद्भाव एवं सौहार्द, मानवीय मूल्यों के लिए पल-पल जीने वाले गणेश शंकर विद्यार्थी 25 मार्च, 1931 को कानपुर के सम्प्रदायिक दंगे की भेंट चढ़ गये। भारत माता के इस वीर सपूत का शव अस्पताल में चार दिन शवों के ढेर में पड़ा सड़ता रहा और फूल गया। दैवयोग से, 29 मार्च को किसी ने विद्यार्थी जी के शव की शिनाख्त की तो अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ, तब पूरा देश शोक-सिंधु में डूबे गया। निश्चितरूप से कलम के धनी गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता के गौरवमय किरीट हैं।

गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्टूबर, 1890 को अपने ननिहाल इलाहाबाद के अतरसुइया मोहल्ले में कायस्थ परिवार में हुआ था। पिता मुंशी जयनारायण श्रीवास्तव तत्कालीन मध्यभारत के मुंगावली में एक विद्यालय में शिक्षक थे और माता गोमती देवी एक सामान्य गृहिणी। नाना सूरज प्रसाद श्रीवास्तव सहायक जेलर थे, इस कारण घर-परिवार में नियम-अनुशासन का सख्त वातावरण था, जिसका प्रभाव विद्यार्थी जी पर पड़ा। उनकी प्राथमिक शिक्षा मुंगावली और विदिशा में पिता की देखरेख में पूरी हुई। परिवार में आर्थिक कठिनाई के कारण संस्थागत पढ़ाई का क्रम खंडित हुआ और आपने हाईस्कूल की परीक्षा व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में उत्तीर्ण कर करेंसी ऑफिस, कानपुर में लिपिक पद पर काम कर परिवार के आर्थिक सुदृढ़ीकरण के अवलम्ब-आधार बने। फारसी और उर्दू के साथ अंग्रेजी पर भी समान अधिकार था, तभी तो विक्टर ह्यूगो के उपन्यास 'नाइनटी थ्री' का हिंदी अनुवाद करने में सफल हुए।

अंग्रेजी सत्ता के विरोद्ध अपने स्वभाव के कारण करेंसी ऑफिस में अधिक समय तक कार्य न कर सके और नौकरी छोड़नी पड़ी। पढ़ने-लिखने में रुचि थी ही। छात्र जीवन से ही तत्कालीन प्रमुख पत्रिकाओं 'कर्मयोगी' एवं 'स्वराज्य' से जुड़े रहे। इन पत्रों में आपकी रचनाएं भी छपीं तो प्रोत्साहन मिला। 16 वर्ष की अवस्था में 'हमारी आत्मोत्सर्गता' नामक पुस्तक लिखी। हीरे की चमक बिखर रही थी। आपके लेख पढ़कर पं. महावीर द्वावेदी बहुत प्रभावित हुए और 'सरस्वती' पत्रिका में उप संपादक पद पर काम करने का प्रस्ताव रखा। विद्यार्थी जी 'सरस्वती' में काम करने लगे। पं. महावीर द्विवेदी का सान्निध्य मिला तो कंचन कुंदन बन निखर गया किंतु विद्यार्थी जी का मन साहित्यिक पत्रिका में नहीं रमा क्योंकि उनमें राजनीति, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और सार्वजनिक जीवन के मुद्दों पर लिखने और अपने विचार समाज तक ले जाने की इच्छा-आकांक्षा बलवती हो रही थी। फलतः आप महामना मदनमोहन मालवीय के पत्र 'अभ्युदय' से जुड़ इलाहाबाद आ गये पर मन में कसक अभी बाकी थी. लगता था कि कुछ विशेष करना है जिसके लिए अपना प्रेस स्थापित कर एक पत्र निकालना होगा।

यह स्वप्न विद्यार्थी जी को 1913 में कानपुर ले आया। समान विचार के साथी माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, कृष्णदत्त पालीवाल, देवव्रत शास्त्री, सुरेशचंद्र भट्टाचार्य एवं युगल किशोर सिंह का सहयोग-सम्बल मिला और अक्टूबर 1913 में साप्ताहिक पत्र 'प्रताप' के विचार स्वप्न को साकार करने की रूपरेखा तैयार हुई और 9 नवम्बर, 1913 को 'प्रताप' का प्रवेशांक लोक सम्मुख प्रकाशित हुआ। 'प्रताप' की नीति के बारे में पहले अंक में ही विद्यार्थी जी ने अग्रलेख में लिखा, ₹समस्त मानवजाति का कल्याण हमारा परमोद्देश्य है। हम अपने देश और समाज की सेवा के पवित्र काम का भार अपने ऊपर लेते हैं। किसी की प्रशंसा या अप्रशंसा, किसी की प्रसन्नता या अप्रसन्नता, किसी की घुड़की या धमकी हमें अपने कर्तव्य मार्ग से न विचलित कर सकेगी। सत्य और न्याय हमारे भीतरी पथ-प्रदर्शक होंगे। सम्प्रदायिक और व्यक्तिगत झगड़ों से 'प्रताप' स्वयं को सदा अलग रखने की कोशिश करेगा।₹ कहना सर्वथा उचित होगा कि 'प्रताप' अपने इस उद्देश्य पथ पर ही अनवरत गतिशील रहा, कभी पथ से विचलित नहीं हुआ। हालांकि 'प्रताप' अंग्रेजी सत्ता की क्रोधाग्नि का शिकार हुआ। विद्यार्थी जी को तीन बार पत्रकारिता के कारण और दो बार राजनीतिक भाषण के कारण जेल जाना पड़ा। 'प्रताप' पर अर्थदण्ड भी लगा, प्रकाशन स्थगित हुआ पर 'प्रताप' पुनि-पुनि नवल प्रताप ग्रहण कर प्रकाशित होता रहा।

गणेश शंकर विद्यार्थी लेखनी के धनी तो थे ही, साथ ही वे क्रांति एवं अहिंसा के समन्वय सेतु भी थे। वह लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के राष्टीय विचार की नौका पर सवार थे तो महात्मा गांधी की अहिंसा की पतवार भी थामे थे। स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रखर प्रचंड स्तम्भ थे तो क्रांतिकारियों के सम्बल मार्गदर्शक भी। कौन नहीं जानता कि भगत सिंह ने कानपुर में 'प्रताप' में आश्रय ले विद्यार्थी जी का सान्निध्य प्राप्त किया था। चंद्रशेखर आजाद से भी भेंट-मुलाकात कर विद्यार्थी जी ने क्रांति पथ का ताव और आब देखा था। उनकी पहल पर ही श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' विरचित गीत 'झंडा ऊंचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' का सामूहिक गायन जलियांवाला बाग बलिदान दिवस के अवसर पर 13 अप्रैल, 1924 को कानपुर में हुआ था।

भारत सरकार ने विद्यार्थी जी की स्मृति में डाक टिकट जारी किया। कानपुर और गोरखपुर में चौराहों के नाम और कानपुर हवाई अड्डा के नाम उन पर रखा गया। गणेश शंकर विद्यार्थी वास्तव में अपने आदर्शों एवं संकल्पों की सिद्धि के लिए जीते रहे और इस असार संसार से जाते-जाते भी मानवता का अमर संदेश दुनिया को दे गये। विद्यार्थी जी की जीवन गाथा हम सभी के लिए न केवल प्रेरक है अपितु जीने के उद्देश्य का मार्गदर्शन भी करती है। उनके विचार के दीपक कोटि-कोटि हृदयों में जलते रहेंगे।

एसीएम के समझाने पर समाप्त हुआ धरना

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। जनपद में बकाया भुगतान की मांग को लेकर आशा बहुओं ने मंगलवार को जिलाधिकारी कार्यालय परिसर में धरना-प्रदर्शन किया। बड़ी संख्या में पहुंचीं आशा कार्यकर्ताओं ने स्वास्थ्य विभाग के खिलाफ नाराजगी जताते हुए आरोप लगाया कि उन्हें लंबे समय से विभिन्न मदों का भुगतान नहीं किया गया है, जिससे उन्हें आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। धरने के दौरान आशा बहुओं ने नारेबाजी करते हुए कहा कि उन्हें समय पर मानदेय और अन्य प्रोत्साहन राशि नहीं मिल रही है। उन्होंने प्रशासन से शीघ्र बकाया भुगतान कराने की मांग की। मामले को लेकर मुख्य चिकित्साधिकारी (सीएमओ) डॉ. राजेश झा ने स्पष्ट रुख अपनाते हुए कहा कि यदि किसी भी आशा कार्यकर्ता का भुगतान वास्तव में लंबित है और उसका संबंधित बाउचर या वैध दस्तावेज उपलब्ध है, तो विभाग तत्काल भुगतान करने के लिए पूरी तरह तैयार है। उन्होंने कहा कि विभाग पारदर्शिता के साथ कार्य कर रहा है और बिना प्रमाण के किसी भी भुगतान का दावा स्वीकार नहीं किया जा सकता।

सीएमओ ने यह भी कहा कि धरना दे रहीं आशा बहुएं अपने बकाया भुगतान से संबंधित कोई ठोस बाउचर या दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर पाईं और केवल मौखिक आरोप लगाती रहीं। उन्होंने आश्वासन दिया कि यदि कोई भी कार्यकर्ता उचित प्रमाण प्रस्तुत करता है, तो उसका भुगतान तत्काल कराया जाएगा। इस दौरान एसीएम द्वितीय राजू कुमार मौके पर पहुंचे और आशा बहुओं से वार्ता की। उन्होंने उन्हें शांतिपूर्वक अपनी बात रखने और आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करने की सलाह दी। अधिकारियों के समझाने के बाद आशा बहुएं धीरे-धीरे शांत हुईं और अंततः बिना कोई बाउचर प्रस्तुत किए धरना समाप्त कर वहां से लौट गईं। प्रशासन का कहना है कि स्वास्थ्य सेवाओं में लगे सभी कर्मियों का भुगतान नियमों के तहत सुनिश्चित किया जाता है और यदि कहीं कोई वास्तविक समस्या है तो उसे प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाएगा। वहीं, अधिकारियों ने अपील की कि किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान के लिए संबंधित दस्तावेजों के साथ विभाग से संपर्क किया जाए, ताकि समयबद्ध तरीके से कार्रवाई की जा सके।

बादलों की आवाजाही से किसान चिंतित

विनय कुमार मिश्र

गोरखपुर। कुछ दिनों से छाए बादल मंगलवार को भी आसमान में टुकड़ों में छाए नजर आए। कुछ दिनों पहले बादलों के साथ हल्की बूंदाबादी और तेज हवाओं के साथ तापमान में गिरावट महसूस की गई थी। मौसम ठंडा और सुहावना हो गया था। लोगों को बढ़ती गर्मी से राहत मिल गई थी। उसके बाद मौसम साफ तो जरूर हो गया लेकिन सोमवार मंगलवार की शाम बादल आसमान में टुकड़ों में नजर आने लगें। मंगलवार को बादलों के साथ हवाएं भी चलती रही । मौसम के बदलते इस रूप से किसानों की चिंताएं बढ़ गई हैं । एक किसान के अनुसार सरसों की फसल काट कर रखी है अगर बारिश हो जाती है तो सब बर्बाद हो जाएगा। वहीं विशुन देव नाम के किसान ने बताया की गेहूं की फसल बर्बाद हो जाएगी। इस समय गेहूं की फसल खेतों में कुछ दिनों बाद पक जाएगी और कटाई मंड़ाई शुरू हो जाएगी । वहीं सरसों की फसल पक गई है और किसान मंड़ाई के बाद उसे रखने की तैयारी में लगे हुए हैं। अगर इस समय बारिश होती है तो गेहूं के दाने काले पड़ सकते हैं वहीं चमक भी गायब हो जाएगी। वही सरसों के दाने इतने छोटे होते हैं की बारिश होने पर मिट्टी में मिल सकते हैं या सब सड़ सकते हैं । किसान मौसम को देखकर घबराए से हुए हैं । अगर गेहूं की फसल की कटाई मंड़ाई के साथ जल्दबाजी की जाएगी तो गेहूं के दाने टुकड़ों-टुकड़ों में हो जायेंगे।

धानुका आश्रम में चतुर्दिवसीय दिव्य वासंतिक नवरात्रि महामहोत्सव पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रमणरेती-परिक्रमा मार्ग स्थित धानुका आश्रम में धानुका एग्रीटेक लिमिटेड (गुरुग्राम) के द्वारा चतुर्दिवसीय दिव्य वासंतिक नवरात्रि महामहोत्सव (पाठात्मक एवं हवनात्मक) अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसके अंतर्गत याज्ञिक रत्न आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के आचार्यत्व में वैदिक ब्राह्मणों के द्वारा श्रीशतचंडी यज्ञ एवं अभिषेकात्मक श्रीशिव शक्ति पाठ, श्रीमहारुद्राभिषेक आदि के अनुष्ठान भी यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुए।

इस अवसर पर पधारी वात्सल्य ग्राम की संस्थापक पद्म विभूषण 'दीदी मां' साध्वी ऋतंभरा ने कहा कि नवरात्रि मां भगवती की उपासना का प्रमुख पर्व हैं।इन दिनों मां भक्ति की आराधना करने से भक्तों के सभी दुःख दूर होते हैं।साथ ही उनकी सभी मनोकामना पूर्ण होती हैं।

भागवत भास्कर कृष्ण चन्द्र शास्त्री ठाकुरजी महाराज ने कहा कि शतचंडी महायज्ञ मां दुर्गा को अत्यधिक प्रिय हैं।इससे माता शीघ्र ही प्रसन्न होकर अपने भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करती हैं।साथ ही उन्हें सांसारिक दुर्गुणों से बचाती हैं।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि ऐसे दिव्य अनुष्ठानों से ही सनातन धर्म व भारतीय वैदिक संस्कृति पल्लवित व पोषित होती है।साथ ही वैदिक मंत्रोच्चार से हमारा तन-मन तथा यज्ञ से वायुमंडल पवित्र होता है।इसीलिए ऐसे अनुष्ठान प्रायः होते रहने चाहिए।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से आचार्य मृदुलकांत शास्त्री, आचार्य जगदीश चन्द्र शास्त्री, डॉ. राधाकांत शर्मा, डॉ. आर. जी. अग्रवाल, महेन्द्र कुमार धानुका, मनीष धानुका, राहुल धानुका, प्रमुख समाजसेवी विजय रिणवां आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।महोत्सव का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

प्रो. वी. रवि ने श्रीवेंकटेश्वर महाविद्यालय में प्राचार्य के रूप में पूरे किए दो वर्ष

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

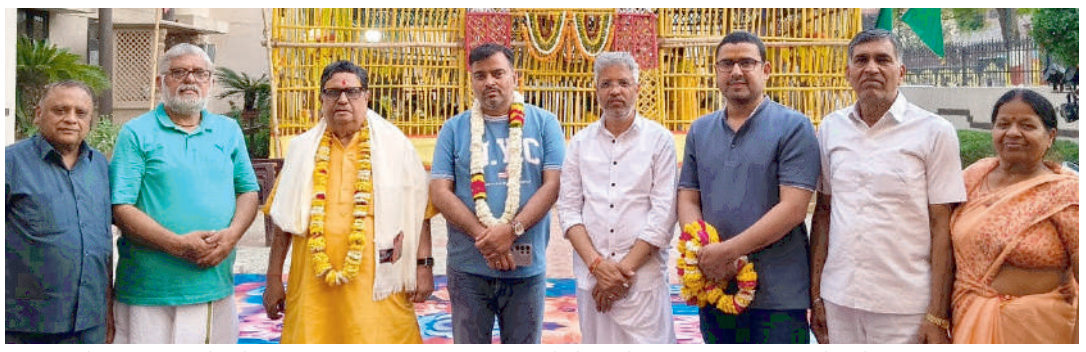

दिल्ली। श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राचार्य के रूप में प्रो. वी. रवि के दो वर्ष पूर्ण होने पर महाविद्यालय परिवार ने उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी के नेतृत्व में प्रशासन, लेखा विभाग एवं स्थापना शाखा विभाग के कर्मचारियों ने प्राचार्य से भेंट कर उनके सफल एवं उल्लेखनीय कार्यकाल के लिए बधाई दी तथा उनके कुशल नेतृत्व की सराहना की।

प्रशासनिक अधिकारी पवन कुमार पाण्डेय ने अपने संदेश में कहा कि, "सर, आपके दूरदर्शी नेतृत्व, अटूट समर्पण एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति आपकी दृढ़ प्रतिबद्धता ने संस्थान की प्रगति और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपके सक्षम मार्गदर्शन में महाविद्यालय ने अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं तथा निरंतर विद्यार्थियों और स्टाफ को प्रेरित कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि, ये दो वर्ष आपके परिश्रम, ईमानदारी और शिक्षा के प्रति आपकी गहन निष्ठा का प्रमाण हैं। हमें आपकी उपलब्धियों पर अत्यंत गर्व है और पूर्ण विश्वास है कि आपके नेतृत्व में महाविद्यालय आने वाले समय में और भी नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा।"

प्राचार्य प्रो. वी. रवि के नेतृत्व में महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। शैक्षणिक क्षेत्र में भी यह महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रमुख कॉलेजों में अपनी विशिष्ट पहचान बना रहा है।प्राचार्य के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में कॉलेज की रैंकिंग में भी सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। साथ ही, विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के कल्याण को प्राथमिकता देना उनकी कार्यशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मीडिया महासंघ की राज्य कमेटी

परिवहन विशेष न्यूज

डिजिटल मीडिया महासंघ की नई राज्य कमेटी घोषित
शैलेश तिवारी चेयरमैन व मनोज शतपथी बने अध्यक्ष
पत्रकारों के अधिकार व डिजिटल मीडिया सशक्तिकरण पर रहेगा फोकस

राउरकेला: ओडिशा डिजिटल मीडिया महासंघ की नई राज्य कमेटी की घोषणा कर दी गई है। संघ द्वारा जारी सूचना के अनुसार, विभिन्न पदों के लिए सदस्यों का चयन किया गया है, जिससे संगठन को नई दिशा और मजबूती मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

नई कमेटी में शैलेश कुमार तिवारी को चेयरमैन पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वहीं, उपाध्यक्ष के रूप में देवाशीष शतपथी और सुभाष कुमार गुप्ता को नियुक्त किया गया है।

इसके अलावा मनोज शतपथी को अध्यक्ष तथा सूर्यकांत खेड़ुआल सिंह को कार्यकारी अध्यक्ष चुना गया है। कमेटी में उपाध्यक्ष, महासचिव सचिव, संगठन सचिव, सचिव, सह- सचिव और कोषाध्यक्ष सहित अन्य पदों पर भी सदस्यों को शामिल किया गया है।

संघ की ओर से बताया गया है कि नई राज्य कमेटी डिजिटल मीडिया को सशक्त बनाने के साथ-साथ पत्रकारों के अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय रूप से कार्य करेगी। संगठन ने विश्वास जताया है कि नई टीम मीडिया जगत में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

पत्रकारों के हक की अनदेखी लोकतंत्र पर सवाल: संत हृदय वरिष्ठ पत्रकार इंदभान भदौरिया का तीखा बयान

सुरक्षा कानून की मांग तेज, बोले – भेदभाव और भ्रष्टाचार के कारण संकट में पत्रकारों के साथ नहीं खड़ा होता कोई।
देशहित में, मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया भेदभाव और भ्रष्टाचार से मुक्त संगठन से जुड़कर सत्य, न्याय, सुरक्षा और अधिकारों के लिए संघर्ष जरूरी

उत्तर प्रदेश। संजय साग़र सिंह। पत्रकारों की सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों को लेकर एक बार फिर आवाज बुलंद हुई है। वरिष्ठ पत्रकार नेता इंदभान भदौरिया ने लोकतंत्र की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि पत्रकार को लोकतंत्र का स्तंभ माना जाता है, लेकिन विडंबना यह है कि भेदभाव और भ्रष्टाचार के कारण लोकतंत्र के तीनों स्तंभ ही पत्रकारों के हितों की अनदेखी करते हैं।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जब पत्रकार किसी संकट में होता है या उसका निधन हो जाता है, भेदभाव और भ्रष्टाचार के कारण तब न तो कोई संस्थान आगे आता है और न ही कोई ठोस सहायता मिलती है। "हम खबरों के माध्यम से समाज का पक्ष रखते हैं, लेकिन हमारी सुरक्षा और अधिकारों की चिंता करने वाला कोई नहीं है। श्री भदौरिया ने जोर देते हुए कहा कि हर पत्रकार को अपने हक और सम्मान के लिए संगठित होकर संघर्ष करना होगा।

इंदभान भदौरिया ने बताया कि उनका संगठन देशभर में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की मांग को लेकर सक्रिय रूप से अभियान चला रहा है। उन्होंने पत्रकारों को समाज का आईना बताते हुए कहा कि वे जनता और सरकार के बीच सेतु का कार्य करते हैं और लोकतंत्र की आवाज को मजबूती देते हैं। बावजूद इसके, आज पत्रकार आर्थिक तंगी, असुरक्षा भेदभाव और बढ़ते भ्रष्टाचार के माहौल से जूझ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि संगठन पत्रकारों के हित में कई महत्वपूर्ण पहल कर रहा है, जिसमें प्रशिक्षण शिविर, जिला सम्मेलन, पत्रकार राहत कोष, टोल टैक्स में छूट, आयुष्मान कार्ड और बीमा सुरक्षा जैसी सुविधाओं की मांग शामिल है। इन प्रयासों का उद्देश्य पत्रकारिता को नैतिक मूल्यों के साथ मजबूत करना और पत्रकारों को सुरक्षा प्रदान करना है तथा पत्रकारिता में फैले भेदभाव को समाप्त करना हैं। तभी पत्रकारों को न्याय मिल सकेगा।

अंत में भदौरिया ने स्पष्ट किया कि पत्रकार सुरक्षा कानून लागू कराना संगठन की प्राथमिकता है। इसके लिए देशभर में अभियान चलाया जा रहा है और राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल तथा मुख्यमंत्रियों को ज्ञापन सौंपे जाएंगे। उन्होंने कहा कि पत्रकारों के अधिकार और सम्मान के लिए अब निर्णायक लड़ाई लड़ी जाएगी, ताकि लोकतंत्र को और अधिक सशक्त बनाया जा सके और भेदभाव को खत्म किया जा सके। देशहित में, मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ इंडिया भेदभाव और भ्रष्टाचार से मुक्त संगठन से जुड़कर सत्य, न्याय, सुरक्षा और अधिकारों के लिए संघर्ष जरूरी हैं।

समय के चक्र ने इंसानी व्यवहार को पूरी तरह बदल दिया है....

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह (सहज़),
हरदा, मध्य प्रदेश

इंसानी समाज की नींव हमेशा से सच्चे दिल, सम्मान और आपसी दया पर टिकी रही है। इतिहास के पन्ने पलटकर देखें तो एक ऐसा समय दिखता है, जब रिश्तों को अपनी जान की आहुति देकर सींचा जाता था। ₹पुराने लोग बहुत अच्छे हुआ करते थे₹ ये बात वास्तव में उस स्वर्ण युग की याद दिलाती है, जहां इंसान की पहचान उसका धन-दौलत नहीं, बल्कि उसका बड़ा दिल और ऊंचा चरित्र होता था। उस ख़ुशहाल दौर में अगर किसी को थोड़ी-सी मोहब्बत भी मिल जाती, तो बदले में वह अपनी पूरी ज़िंदगी न्यौछावर कर देता। वे लोग थे जिनके पास वादों को निभाने के लिए अपनी जान तो थी, लेकिन धोखे और छल की कोई गुंजाइश ही नहीं। उनके लिए ₹वफ़ादारी₹ एक पवित्र कर्तव्य थी, जिसे वे अपनी अंतिम सांस तक निभाते हुए अपनी ऊंचाई मानते थे।

लेकिन दुख की बात है कि समय के चक्र ने इंसानी व्यवहार को पूरी तरह बदल दिया है। आज के भौतिकवादी युग में हमने विकास की ऊंचाइयां तो छू लीं, ब्रह्मांड के रहस्यों पर विजय पा ली, लेकिन अपने अंदर के इंसान को खो बैठे। ₹अब लोग बहुत समझदार हो गए हैं₹। ये समझदारी असल में चालाकी और स्वार्थ है, जिसने रिश्तों की पवित्रता को कुचल दिया है। आज का इंसान भावनाओं को भी फ़ायदे-नुकसान के तराज़ू पर तौलता है। अगर आप आज किसी को अपनी सच्ची मोहब्बत, असीम खुलापन और अटूट विश्वास का उपहार दें, तो वह वफ़ादारी से जवाब देने के बजाय आपको ऐसा ₹सबक़₹ सिखा देता है जो आपकी आत्मा को घायल कर देता है। ये सबक़ वास्तव में उस भरोसे का क़त्ल है, जो एक इंसान दूसरे पर करता है।

हम जिस दौर में जी रहे हैं, यहां मुनाफ़े की सोच ने सच्चाई की जगह ले ली है। लोग आपके साथ तब तक जुड़े रहते हैं, जब तक उनका फ़ायदा जुड़ा हो। जैसे ही फ़ायदे का धागा टूटता है, सारे दावे और वादे रेत की दीवार की तरह ढह जाते हैं। जिसे हम ₹आधुनिकता₹ और ₹बुद्धिमत्ता₹ कहते हैं, वो असल में नैतिक दिवालियापन की चरम सीमा है। क्या ये वाक़ई समझदारी है कि हम दूसरों की भावनाओं के साथ खेलें? क्या ये बुद्धि है कि मोहब्बत के बदले धोखा दें? अगर यही समझदारी है, तो निश्चित रूप से वो पुराना ₹भोलापन₹ और ₹नादानी₹ हज़ार गुना बेहतर थी, जहां कम से कम इंसानियत ज़िंदा थी।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम अपनी इन खोई हुई मूल्यों को फिर से खोजें। हमें इस ₹समझदारी₹ के खोखले छिलके से बाहर निकलकर उन पुराने लोगों की तरह बनना चाहिए, जिनके दिल विशाल थे और ज़ुबान पर सच्चाई थी। जब तक हम रिश्तों को भौतिक फ़ायदों से ऊपर नहीं रखेंगे, तब तक समाज में वो शांति और संतोष नहीं आ सकता, जो हमारे पूर्वजों की ख़ासियत थी। हमें समझना होगा कि ज़िंदगी सिर्फ़ सबक़ सिखाने का नाम नहीं, बल्कि एक-दूसरे की मदद करने और मोहब्बत बांटने का नाम है।

डेरा बाबा दंदू राम बैरागी जी के पवित्र स्थान पर रसोई घर में टाइल लगाने के कार्य का शुभ उद्घाटन

मुख्य सेवेदार श्री बलदेव राज बैरागी ने की शुरुआत

अमृतसर, 24 मार्च (साहिल बेरी)

आज डेरा बाबा दंदू राम बैरागी जी के पवित्र स्थान को और अधिक सुंदर एवं सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से संगत के सहयोग से डेरा परिसर के रसोई घर में टाइल लगाने के कार्य का शुभ उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुख्य सेवेदार श्री बलदेव राज बैरागी जी ने अरदास करके कार्य की औपचारिक शुरुआत की। उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में संगत ने भाग लिया और सेवा भावना का परिचय दिया। सेवेदारों ने बताया कि डेरा परिसर में सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए समय-समय पर विकास कार्य करवाए जाते हैं, ताकि यहां आने वाली संगत को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने बताया कि डेरा बाबा दंदू राम बैरागी जी का यह पवित्र स्थान गुमानपुरा, भैणी बासरके के पास रेलवे लाइन के निकट स्थित है और इसका इतिहास लगभग 600 वर्षों से भी अधिक पुराना है। यह धार्मिक स्थल क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है और यहां प्रतिदिन दूर-दूर से श्रद्धालु माथा टेकने आते हैं।

संगत में यह गहरा विश्वास है कि इस पवित्र स्थल पर की गई अरदास अवश्य स्वीकार होती है और मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इसी कारण यह स्थान आस्था और भक्ति का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

अंत में मुख्य सेवेदार श्री बलदेव राज बैरागी जी ने संगत का धन्यवाद करते हुए अपील की कि सभी लोग ऐसे सेवा कार्यों में अपना योगदान दें, ताकि इस पवित्र स्थान की सुंदरता और बढ़े तथा यह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहे।

महिलाओं की ज़िंदगी में सुधार लाना : केंद्रीय जल संसाधन मंत्री श्री पाटिल

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: ओडिशा में जल जीवन मिशन 2.0 को लागू करने के लिए आज नई दिल्ली में केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय और ओडिशा सरकार के बीच एक MoU साइन किया गया। वर्चुअल तरीके से हुए इस इवेंट में लोक सेवा भवन में मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी और नई दिल्ली में केंद्रीय जल संसाधन मंत्री सीआर पाटिल और राज्य मंत्री बी. सोमन्ना शामिल हुए।

इस मौके पर मुख्यमंत्री श्री माझी ने जल जीवन मिशन शुरू करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद दिया और कहा कि देश में अब तक 77.3 प्रतिशत परिवारों को नल कनेक्शन मिल चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस मिशन को 2028 तक बढ़ाने को केंद्रीय कैबिनेट ने मंज़ूरी दे दी है और यह 'हर घर जल' के लक्ष्य को पाने की दिशा में एक ज़रूरी कदम है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने जल जीवन मिशन 2.0 के तहत एक साफ़ रोडमैप तैयार किया है। ऑपरेशन और मेंटेनेंस पॉलिसी के ज़रिए पब्लिक पार्टिसिपेशन, फाइनेंशियल सस्टेनेबिलिटी और सही मेंटेनेंस पर ज़ोर दिया जा रहा है। सुजलम भारत प्लेटफॉर्म के ज़रिए लगभग 5,000 ग्रामीण पाइप्ड वॉटर स्कीम की ID तैयार की गई हैं और सभी स्कीम का फाइनेंशियल कोऑर्डिनेशन पूरा हो चुका है। ओडिशा में हर व्यक्ति को हर दिन 70 लीटर पीने का पानी दिया जा रहा है, वहीं राज्य सरकार इस मिशन पर लगभग 40 परसेंट फंड खर्च कर रही है। वसुधा हेल्पलाइन, WhatsApp सर्विस और डिजिटल शिकायत प्लेटफॉर्म के ज़रिए नागरिक केंद्रित सेवाओं को मज़बूत किया गया है।

विलेज वॉटर एंड सैनिटेशन कमेटी (VWSC) के ज़रिए गांव के लेवल पर लोगों की भागीदारी बढ़ी है और 30 में से 25 जिलों में "जल अत्तर दिवस" सफलतापूर्वक मनाया गया है। बाकी जिलों में भी जल्द ही ऐसा किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मिशन से महिलाओं की ज़िंदगी में बड़ा बदलाव आया है, क्योंकि अब उन्हें पानी लाने के लिए दूर नहीं जाना पड़ता। जल शक्ति अभियान ओडिशा में एक जन आंदोलन बन गया है। इसके तहत 2.21 लाख वॉटर कंज़र्वेशन और रेनवॉटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर, 43 हज़ार से ज़्यादा वॉटर रिज़र्वॉयर रेस्टोरेशन, 42 हज़ार ग्राउंडवॉटर रिचार्ज और 2 लाख से ज़्यादा वाटरशेड के काम पूरे किए गए हैं। इसी तरह, 2 करोड़ से ज़्यादा पेड़ लगाए गए हैं।

इस मौके पर, केंद्रीय जल संसाधन, जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल ने कहा कि यह स्कीम, जो 2024 में शुरू हुई थी, उसे जल जीवन मिशन 2.0 के ज़रिए 2026-2028 तक बढ़ा दिया गया है। यह मिशन महिलाओं की ज़िंदगी को बेहतर बनाएगा। यह मिशन ओडिशा में पानी की उपलब्धता पक्का करने के लिए है जहाँ पानी की कमी है।

पंचायती राज और पीने के पानी के मंत्री रवि नारायण नायक, मुख्य सचिव श्रीमती अनु गर्ग, केंद्रीय पीने के पानी और स्वच्छता सचिव अशोक मीणा, विकास आयुक्त और अतिरिक्त मुख्य सचिव देवरंजन कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव शाश्वत मिश्रा, वित्त विभाग के प्रमुख सचिव संजीव कुमार मिश्रा, पंचायती राज और पीने के पानी के विभाग के आयुक्त और सचिव गिरीश एस.एन. और दूसरे सीनियर अधिकारी इस इवेंट में मौजूद थे।

विश्व यक्षा दिवस पर स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान द्वारा 76 नये डॉक्टरों को दिये गये नियुक्ति पत्र

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, झारखंड द्वारा आई.पी.एच. प्रेक्षागृह, नामकुम, रांची में विश्व यक्ष्मा दिवस के अवसर पर संविदा आधारित चयनित चिकित्सा पदाधिकारियों के बीच नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. इरफान अंसारी ने 76 चिकित्सा पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया ।उन्होंने कहा कि आने वाले समय में और भी बड़े स्तर पर नियुक्तियां की जाएंगी। राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए उन्होंने कहा कि एक डॉक्टर का योगदान समाज में अमूल्य होता है और उनकी सेवाएं जीवनभर याद रखी जाती हैं।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफ़ान अंसारी ने कहा कि झारखंड सरकार स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार के लिए लगातार ठोस कदम उठा रही है। पिछले एक वर्ष में 8 नए मेडिकल कॉलेज स्थापित करने की दिशा में कार्य किया गया है, जिससे राज्य का चिकित्सा ढांचा मजबूत होगा। साथ ही, डॉक्टरों की कमी को दूर करने के लिए शीघ्र ही जेपीएससी के माध्यम से 1250 पदों पर नियुक्ति की जाएगी। उन्होंने नव-नियुक्त चिकित्सकों से आह्वान किया कि वे मरीजों के उपचार के साथ-साथ अस्पतालों की व्यवस्थागत कमियों का भी आकलन करें और सरकार को अवगत कराएं, ताकि आवश्यक सुधार किए जा सकें।

मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि राज्य के प्रमुख अस्पतालों में सीटी स्कैन एवं एमआरआई जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है, जिससे मरीजों को अन्य राज्यों में रेफर करने की आवश्यकता कम होगी। झारखंड में पहली बार मेडिकल यूनिवर्सिटी की स्थापना की गई है, जिससे राज्य के छात्र-छात्रायें यहीं चिकित्सा शिक्षा प्राप्त कर सेवाएं दे सकेंगे। इसके अतिरिक्त, ब्लड सप्लाई सिस्टम को सुदृढ़ बनाने के लिए टोल फ्री नंबर के साथ नई व्यवस्था विकसित की जा रही है, ताकि जरूरतमंदों को समय पर रक्त उपलब्ध हो सके।गंभीर बीमारियों की रोकथाम पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि सिकल सेल एनीमिया एवं थैलेसीमिया की पहचान के लिए राज्यव्यापी जांच अभियान चलाया जाएगा। साथ ही, वर्ष 2030 तक टीबी मुक्त झारखंड बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु विशेष अभियान संचालित किए जा रहे हैं, विशेषकर जनजातीय क्षेत्रों में। स्वास्थ्य सेवाओं के आधुनिकीकरण के लिए एआई एवं रोबोटिक तकनीक को भी अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में लागू करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि टीबी उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा व्यापक स्तर पर जांच, जागरूकता एवं उपचार कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। वर्ष 2025 में चलाए गए 100 दिवसीय अभियान के दौरान लगभग 9.5 लाख लोगों की जांच की गई, जो 2024 की तुलना में दोगुनी है। इस वर्ष 12 लाख लोगों की जांच का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने बताया कि संसाधनों में वृद्धि एवं आधुनिक जांच सुविधाओं के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि चिकित्सा पदाधिकारियों की नियुक्ति पूरी तरह पारदर्शी एवं बीडिंग प्रक्रिया के माध्यम से की गई है और चयनित चिकित्सकों को अपने पदस्थापन स्थल पर समर्पण के साथ कार्य करना होगा।

अभियान निदेशक शशि प्रकाश झा ने कहा कि 24 मार्च 1882 को टीबी के जीवाणु की खोज हुई थी, जिसके कारण इस दिन को विश्व टीबी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि आगामी 100 दिनों में राज्य के सभी जिला अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों एवं स्वास्थ्य उपकेंद्रों में टीबी की स्क्रीनिंग, जांच, जागरूकता एवं उपचार कार्यों को तेज किया जाएगा। साथ ही, टीबी मरीजों को मिलने वाली प्रोत्साहन राशि के लंबित भुगतान का भी निपटारा किया जाएगा।

कार्यक्रम में डॉ. सिद्धार्थ सान्याल (निदेशक प्रमुख, स्वास्थ्य सेवाएं), शशि प्रकाश झा (अभियान निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, झारखंड) सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

जादुई आंकड़ों का बजट, हकीकत में देश, किसान और पंजाब के साथ अन्याय" — सांसद गुरजीत सिंह औजला

अमृतसर 24 मार्च (साहिल बेरी)

अमृतसर: अमृतसर से सांसद गुरजीत सिंह औजला ने आज सांसद में बजट सत्र पर केंद्र सरकार के खिलाफ कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए इसे "जादुई आंकड़ों का बजट" करार दिया है। उन्होंने कहा कि लोग महंगाई से लड़े , सेना चीन से लड़े, मीडिया पाकिस्तान से लड़े ओर बीजेपी सिर्फ चुनाव लड़े।

उन्होंने कहा कि सरकार पिछले कई वर्षों से आंकड़ों की बाजीगरी के जरिए देश की जनता को भ्रमित कर रही है, जबकि जमीनी स्तर पर न तो विकास दिख रहा है और न ही आम जनता को कोई राहत मिल रही है।

औजला ने कहा कि भाजपा सरकार में प्रशांति खुद को "विश्व गुरु" कहते है, लेकिन आज हालात ऐसे हैं कि देश की नीतियां बाहरी दबावों के अधीन नजर आती हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि अंतरराष्ट्रीय समझौतों में भारत के हितों से समझौता किया जा रहा है, जिसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था और किसानों पर पड़ रहा है।

किसानों के साथ वादाखिलाफी

सांसद औजला ने कहा कि 2014 में किसानों की आय दोगुनी करने, स्वामीनाथन रिपोर्ट लागू करने और MSP की गारंटी देने के बड़े-बड़े वादे किए गए थे, लेकिन आज तक इनमें से कोई भी वादा पूरा नहीं हुआ।उन्होंने कहा कि महंगे डीजल, ट्रैक्टर पार्ट्स पर GST और बढ़ती लागत के चलते किसान गंभीर संकट में है, जबकि बजट में उनके लिए कोई ठोस राहत नहीं दी गई।

पंजाब के साथ लगातार भेदभाव

औजला ने आरोप लगाया कि देश की खाद्य सुरक्षा और सीमा सुरक्षा में अहम भूमिका निभाने वाले पंजाब को बजट में नजरअंदाज किया गया है।

पंजाब के लिए कोई विशेष इंडस्ट्रियल पैकेज नहीं

बॉर्डर एरिया के विकास और कृषि डायवर्सिफिकेशन के लिए कोई प्रावधान नहीं।

30,000 करोड़ रुपये की कैश क्रेडिट लिमिट का कोई स्पष्ट हिसाब नहीं। उन्होंने कहा कि इसका बोझ आने वाली पीढ़ियों को उठाना पड़ेगा।

उद्योग और युवाओं के भविष्य पर खतरा

औजला ने कहा कि "मेक इन इंडिया" जैसे नारे सिर्फ दिखावे तक सीमित रह गए हैं। विदेशी समझौतों और नीतियों के कारण भारतीय उद्योगों पर दबाव बढ़ रहा है, जिससे युवाओं के रोजगार के अवसर कम हो रहे हैं। उन्होंने मांग की कि पंजाब को भी पड़ोसी राज्यों की तरह विशेष औद्योगिक पैकेज दिया जाए।

शिक्षा और खेलों की अनदेखी

उन्होंने कहा कि खासकर बॉर्डर क्षेत्रों में शिक्षा का ढांचा बेहद कमजोर हो चुका है। स्कूलों की कमी और कम बजट के कारण गरीब बच्चों का भविष्य अंधकार में जा रहा है। साथ ही, अमृतसर में स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी स्थापित करने की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि पंजाब के खिलाड़ी देश का नाम रोशन कर रहे हैं, लेकिन उन्हें आवश्यक सुविधाएं नहीं मिल रही हैं।

महंगाई और बढ़ते कर्ज से परेशान जनता

औजला ने कहा कि देश पर कर्ज लगातार बढ़ता जा रहा है और महंगाई ने आम जनता की कमर तोड़ दी है। तेल, गैस और रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी से हर वर्ग प्रभावित हो रहा है, लेकिन बजट में इससे निपटने के लिए कोई ठोस नीति नजर नहीं आती।

रुके प्रोजेक्ट और बढ़ता भ्रष्टाचार

उन्होंने नेशनल हाईवे अथॉरिटी के अधूरे प्रोजेक्ट्स, रुके हुए इंफ्रास्ट्रक्चर और बढ़ते भ्रष्टाचार पर भी सवाल उठाए। साथ ही, अमृतसर में लंबित शैक्षणिक संस्थानों और प्रसारण परियोजनाओं को जल्द पूरा करने की मांग की। सांसद गुरजीत सिंह औजला ने कहा कि यह बजट न तो किसानों के हित में है, न पंजाब के विकास के लिए और न ही देश के आम नागरिक के लिए। उन्होंने केंद्र सरकार से अपील की कि जमीनी सच्चाई को ध्यान में रखते हुए पारदर्शी और जनहितकारी नीतियां बनाई जाएं, ताकि देश का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके।

वुमेन सम्मिट 2026 में ट्रेलब्लेज़र अवार्ड से दिल्ली में सम्मानित हुई झारखंड की महिला विधायक कल्पना

झारखण्ड में महिलाएं लाभार्थी नहीं, बल्कि उद्यमी और बदलाव की नायिका :कल्पना सोरेन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची / दिल्ली , नई दिल्ली के हयात रीजेंसी में आयोजित 'ब्रिक्स सीसीआई वीई एनुअल वुमेन समिट एंड फेलिसिटेशन 2026' के दौरान गांडेय विधायक कल्पना सोरेन को प्रतिष्ठित 'वुमेन एम्पायरमेंट ट्रेलब्लेज़र्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया। ब्रिक्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के महिला सशक्तिकरण वर्टिकल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उन्हें यह सम्मान महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए दिया गया।

इस मौके पर कल्पना सोरेन ने कहा यह पुरस्कार केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह झारखण्ड की हर मंईयाँ और देश-दुनिया की उन अनगिनत महिलाओं का है जो अपने परिवार, समुदाय और अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रहीं हैं। आज महिलाएं व्यापार, खेल, अंतरिक्ष, विज्ञान, नवाचार और शासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में बाधाओं को पार कर मुकाम हासिल कर रहीं हैं। वे केवल राज्य और देश के विकास का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे इसे गति दे रहीं हैं।

कल्पना सोरेन ने कहा कि विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों की महिलाओं की आवाज को सुनने और उन्हें अवसरों तक पहुँचाने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखण्ड में महिलाओं को केवल लाभार्थी के रूप में नहीं, बल्कि उद्यमी और बदलाव की नायिका के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय उद्यमों के माध्यम से महिलाओं द्वारा बनाई जा रही आर्थिक स्थिरता और आत्मविश्वास की सराहना की।

कल्पना सोरेन ने अपनी हालिया लंदन यात्रा के अनुभव साझा करते हुए बताया कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय जैसे वैश्विक संस्थानों में पढ़ रही झारखण्ड की छात्राओं के जुनून और बाधाओं से जूझने के उनके दृढ़ संकल्प ने उन्हें भविष्य के प्रति अत्यधिक विश्वास और आशा से भर दिया है।सशक्तिकरण केवल समावेश तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें निष्पक्षता सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि हर महिला को बढ़ने और नेतृत्व करने का समान अवसर मिले।

इस अवसर पर मीनाक्षी लेखी पूर्व विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार और ग्लोबल चेयर, मिशन शक्तिसैट, रक्षा खडसे, राज्य मंत्री, युवा मामले और खेल, भारत सरकार, अभिषेक सिंह महानिदेशकक एनआईसी और अतिरिक्त सचिव, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, संजय भट्टाचार्य पूर्व बीआरआईसीएस शेरपा और भारत सरकार के सचिव, डॉ. रूपिंदर बरार संयुक्त सचिव, कोयला मंत्रालय, भारत सरकार, अभिनेत्री शबाना आज़मी, अभिनेत्री, उद्यमी, और यूएन एडवोकेट सुश्री भूमि पेडनेकर, सुश्री लेबोगैंग जुलुः राष्ट्रीय अध्यक्ष, ब्रिक्स महिला बिजनेस अलायंस - दक्षिण अफ्रीका, डॉ. अमिता चौहान शिक्षाविद, और एमिटी इंटरनेशनल स्कूलों की अध्यक्ष, सुश्री मार्गरेट कोएल्हो निदेशक, सेब्रा नेशनेल, समीर शास्त्री उपाध्यक्ष, ब्रिक्स सीसीआई, एवं अध्यक्ष, ब्रिक्स सीसीआई यंग लीडर्स, अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिगण एवं बीआरआईसीएस सीसीआई के पदाधिकारीगण उपस्थित थे

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023